

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

एयं खु पाणिणो सारं,
जं ण हिंसइ कं वणं।
अहिंसा समयं वेव,
एयावंतं वियाणिया।

ज्ञानी होने का यही सार है
कि वह किसी की हिंसा नहीं
करता। समता अहिंसा है,
इतना ही उसे जानना है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 2 • 18 - 24 अक्टूबर, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 16-10-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

अभातेयुप की नवमनोनीत राष्ट्रीय कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह

धर्मसंघ में मुमुक्षु तैयार करने में योगभूत बने अभातेयुप : आचार्यश्री महाश्रमण



भीलवाड़ा, 8 अक्टूबर, 2021

महातपस्वी, युवामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में अभातेयुप के 29वें राष्ट्रीय अध्यक्ष का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 29वें नवनिर्वाचित अध्यक्ष का शपथ ग्रहण समारोह अभातेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पंकज डागा, गुलाबबाग अपने युवा साथियों के साथ पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचे। निवर्तमान अध्यक्ष संदीप कोठारी ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष पंकज डागा को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की एवं उन्हें पद की शपथ दिलाई। शपथ समारोह से पहले पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ की कृपा करवाई।

निवर्तमान अध्यक्ष ने नवमनोनीत अध्यक्ष को शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए विकास की मंगलकामना की। नवमनोनीत अध्यक्ष ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए षष्ठीपूर्ति पर आध्यात्मिक तप करवाने की भावना व्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वचन की कृपा करते हुए फरमाया कि अभातेयुप का दायित्व हस्तांतरण का प्रसंग है। एक टीम कार्य करती है, तो दायित्व से मुक्ति ले तब आत्म-तुष्टि हो जाए कि हमने अपनी ओर से अच्छा कार्य किया है। वस्तुतः यह संतुष्टि है और दूसरों को भी संतुष्टि हो कि अच्छा काम किया है। यह उस सेवा-कार्य का बड़ा पुरस्कार हो जाता है।

एक टीम ने अपना कार्यकाल पूरा

किया है और दूसरी टीम ने दायित्व स्वीकार करने की प्रक्रिया में आगे बढ़ी है। आने वाली टीम का भी संकल्प-भावना हो कि हमें अच्छा कार्य करना है और पवित्र आध्यात्मिक, धार्मिक सेवा में अपना योगदान देना है। संदीप कोठारी और उसकी टीम गत कार्यकाल में दायित्व संभाल रही थी। संदीप को कल्याण परिषद के संयोजक का दायित्व भी दिया गया था।

कार्यकाल पूरा हुआ है। आगे जैसा भी मौका मिले, कार्य तो किसी रूप में हो, उसमें अपना योगदान दिया जा सके। अपनी व दूसरों की आत्मा के कल्याण का कार्य किया जा सके वो लक्ष्य रहना चाहिए।

पंकज डागा की नई टीम आई है। नई टीम भी खूब आध्यात्मिक उत्साह के साथ अच्छा कार्य करने का, सेवा करने का प्रयास करती रहे। एक आयाम जो कठिन भी है, वह है कि मुमुक्षुओं को तैयार करने में योगदान दें। आपके परिवार संबंधी लोगों या समाज में जो छोटे भाई-बाईयाँ हों उनमें मुमुक्षुत्व का भाव बढ़ सके या अपने परिवार में कोई तैयार हो तो उनके बाधा डालने का प्रयास न हो। मुमुक्षु संख्या बढ़ाने में अभातेयुप जितना संभव हो सके, उतना योगदान देने का प्रयास करें।

अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार हैं, जो अपना योगदान पर्यवेक्षक के रूप में वर्षों से इस कार्य से जुड़े हुए हैं। अभातेयुप को आगे बढ़ाने व आध्यात्मिक सहयोग में अपना अच्छा योगदान देते रहें, खूब अच्छा कार्य चले। नई टीम को मंगलपाठ सुनवाया।

मुनि नयकुमार जी ने अपनी भावना

अभिव्यक्त करते हुए बताया कि पूज्यप्रवर का आशीर्वाद अभातेयुप को मिलता रहा है और आगे भी मिलता रहे। अभातेयुप की जो ड्रेस है, वो मुमुक्षु जैसी ही है। गुरुदेव के ५०वें दीक्षा अमृत महोत्सव का दायित्व गुरुदेव अभातेयुप को फरमाएँ। युवा दिवस है, इसे जितनी ऊँचाई अभातेयुप प्रदान कर सके, शायद और नहीं कर पाएँ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

तीर्थंकर महावीर के प्रतिनिधि, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अहिंसा का संदेश हमें धार्मिक साहित्य में मिलता है। जैन आगम में कहा गया है कि कोई भी प्राणी हंतव्य नहीं है। यह अहिंसा धर्म है, शाश्वत धर्म है।

दुनिया में अनेक धर्म-संप्रदाय हैं, परंतु कौन-सा धर्म-संप्रदाय होगा जो अहिंसा को नहीं मानता है। अहिंसा तो मौलिक तत्त्वों में एक तत्त्व है। जो गृहस्थ है, जो व्यापार आदि करने वाले होते हैं, उनके लिए पूर्णतया अहिंसा का पालन और भी कठिन हो जाता है। परंतु गार्हस्थ्य में रहते हुए भी कई अंशों में अहिंसा का पालन किया जा सकता है। साधु के लिए तो अहिंसा का पालन बहुत ज्यादा आवश्यक है। हम लोग जैन धर्म से जुड़े हुए हैं। आचार्यप्रवर ने उपस्थित दाऊदी बोहरा मुस्लिम समाज को जैन धर्म एवं तेरापंथ धर्म के बारे में जानकारी दी एवं कहा कि हम लोगों के पाँच महाव्रत हैं। जिनका हम जीवन-भर सजगता से पालन करते हैं। पाँचों महाव्रत व रात्रि भोजन

विरमण को विस्तार से समझाते हुए अहिंसा पालन का महत्व समझाया। कोई दोष लग जाए तो प्रायश्चित्त लेते हैं।

आचार्यप्रवर ने साधुचर्या की जानकारी देते हुए फरमाया कि साधु न तो स्वयं पकाते हैं, न दूसरों से पकाते हैं। वे तो भोजन की पूर्ति के लिए गृहस्थों के घर में बने भोजन में से थोड़ा-थोड़ा भिक्षा के रूप में ग्रहण करते हैं। साधु के पास न एक पैसा न कोई जमीन या भवन होता है। जहाँ जगह मिले रह जाते हैं। हमारे धर्मसंघ में सात सौ से भी ज्यादा साधु-साधवियाँ हैं। साधुओं से कुछ अलग एक श्रेणी-समण श्रेणी है, जो विदेश भी जाती है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)



अभातेयुप के गौरव को शिखर चढ़ाने के लिए संकल्पित नवमनोनीत अध्यक्ष

भीलवाड़ा।



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के उदयपुर में ५५वें वार्षिक अधिवेशन की साधारण सभा में प्रतिभाशाली, संघभक्ति से ओतप्रोत कर्मठ व्यक्तित्व के धनी पंकज डागा को वर्ष 2021-2023 के लिए 29वें राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया।

आपका जन्म 26 फरवरी, 1967 को गंगाशहर में हुआ। आप मूल निवासी भीनासर एवं वर्तमान में गुलाबबाग (बिहार) में प्रवासित हैं। धर्मसंघ के लिए पूर्ण समर्पित, धुन के पक्के, जोश से लबरेज कार्यकर्ता के रूप में आपकी विशेष पहचान है। गुरु इंगित में ही अपनी सृष्टि को समाहित करने वाले ऐसे व्यक्तित्व का राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मनोनीत होना अभातेयुप के लिए गौरव की बात है। बचपन से ही धार्मिक संस्कारों में पले-बढ़े पंकज डागा विनम्र, दूरदर्शी एवं संकल्प चेतना के धनी हैं। पूर्वांचल में प्रवासित पंकज डागा बचपन से ही धर्मसंघ की संस्थाओं से जुड़े रहे हैं और अनेक पदों पर रहकर अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं। गुलाबबाग तेयुप में कार्यकारिणी सदस्य, संगठन मंत्री, मंत्री एवं खुशकीबाग परिषद में अध्यक्ष के रूप में सेवाएँ देने के अलावा स्थानीय सभा में वर्ष 2006 से 2015 तक सहमंत्री के रूप में कार्य कर चुके हैं। नेपाल-बिहार सभा में महासचिव के रूप में 2015 में अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद में वर्ष 2009 से 2015 तक कार्यकारिणी में रहने के पश्चात 2015-2019 कार्यकाल में सहमंत्री, 2019-2021 में उपाध्यक्ष, 2021-2023 में प्रबुद्ध विचारक के रूप में आपने अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर में 2020 से ट्रस्टी के रूप अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल बैंगलुरु में भी ट्रस्टी के रूप में सहभागी हैं। गुलाबबाग में गारमेट शोरूम व फूड ग्रेन का व्यवसाय करने वाले पंकज डागा प्रतिदिन माला, शनिवार सामायिक, व्याख्यान श्रवण कर आध्यात्मिक शक्ति का भी निरंतर जागरण करते रहते हैं। लेखन के शौकीन और मधुर आवाज के धनी पंकज डागा समय-समय पर अपने गीतों के माध्यम से श्रावक समाज का ध्यान आकर्षित करते हैं।

आपके पिता शिखरचंद डागा, माता विमला देवी डागा के शुभ संस्कार आपको मिले हैं और यही संस्कार आपके जीवन में प्रबुद्धमान हैं। आपकी धर्म सहायिका रेखा डागा संघनिष्ठ हैं और आपके द्वारा प्रदत्त की जा रही संघसेवा में सहभागी बनकर स्वयं को सौभाग्यशाली समझती हैं। अपने परिवार के धार्मिक संस्कारों के साथ पुत्र खुशहाल, लक्ष्य एवं पुत्री हिमांशी डागा भी निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

आपके जीवन की एक और विशेषता है कि समझ आने के पश्चात आपने तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य एवं साधु-संतों को ही अपना सब कुछ समझा है आप मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं कर भाव पूजा में विश्वास रखते हैं।

अभातेयुप की परंपरा के अनुसार अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स के प्रधान संपादक का दायित्व भी आपके पास रहेगा।



अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस - अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह समापन

तेरापंथ समाज की धर्मसेना है अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २ अक्टूबर, २०२१

अहिंसा यात्रा के प्रणेता, अहिंसा के महान साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में हिंसा की बात भी कभी-कभी विशेषरूपेण सामने आ जाती है। सामान्य हिंसा तो चलती रहती है। छोटे-छोटे जीवों व स्थावर जीवों की हिंसा तो हो जाती है। युद्ध जैसी स्थिति और आतंकवाद से संदर्भित हिंसात्मक घटनाएँ कभी-कभी हो जाती हैं।

हिंसा से दुःख पैदा होता है। अहिंसा से सुख व शांति मिलती है। दो मार्ग हैं—हिंसा का मार्ग और अहिंसा का मार्ग। हिंसा का मार्ग अशांति को प्राप्त कराने वाला है। अहिंसा का मार्ग शांति तक ले जाने वाला है। आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत सातवाँ और अंतिम दिवस-अहिंसा दिवस है। गांधी जयंती से भी जुड़ा हुआ दिन है। गांधी जी और लालबहादुर शास्त्री से २ अक्टूबर का दिन जुड़ा हुआ है।

दुनिया में यदा-कदा ऐसे विशिष्ट व्यक्ति सामने आते हैं, जो कुछ पथदर्शन देने वाले होते हैं। अच्छे मार्ग पर चलने वाले, एक राह बनाने वाले होते हैं। राह पर चलने की राह भी वो लोगों में पैदा कर देते हैं। फिर कईयों में उत्साह भी पैदा कर देते हैं। ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों का होना दुनिया के लिए मानो एक सौभाग्य की सी बात हो जाती है।

आदमी सेवा-कार्य करता है, तो वो वहाँ सेवा की भावना है, तो अलग बात है। वहाँ दिखावा आ जाता है, तो अलग बात हो जाती है। गांधी जी जब विदेश यात्रा पर जा रहे थे, तो बेधरजी स्वामी नाम के जैन संत से संपर्क हुआ। उन्होंने मोहनदास को तीन संकल्प दिए—शराब नहीं पीना, मांसाहार नहीं करना और स्त्री संसर्ग में नहीं पड़ना। ये तीन वचन लेकर वे विदेश गए।

ये तीन नियम अणुव्रत जैसे नियम हैं। गांधी जी का वैशिष्ट्य आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ वैशिष्ट्य था। आज व्यापक रूप में अहिंसा दिवस है, जो अणुव्रत से भी जुड़ा हुआ है। हिंसा और अहिंसा ये दोनों दुनिया में चलने वाले तत्त्व हैं। हिंसा से संपूर्णतया मुक्त हो जाना सामान्य व्यक्ति के लिए असंभव सा है। कारण हर प्रक्रिया में जगह-जगह यह हिंसा का प्रकर जुड़ा रहता है।

हिंसा के तीन प्रकार हैं—आरम्भजा हिंसा, प्रतिरक्षात्मकी हिंसा और संकल्पजा हिंसा। क्रोध या लोभवश हिंसा करना संकल्पजा हिंसा है। यह हिंसा एक गृहस्थ के लिए भी परित्याज्य है। आरम्भजा और प्रतिरक्षात्मक हिंसा तो मान लें जरूरी है। अणुव्रत में तो निर-अपराध की हिंसा न



करने की बात आती है। बिना मतलब हिंसा न करें।

साधु तो अहिंसा के पुजारी होते हैं। परमपूज्य आचार्यश्री महापूज जी ने अहिंसा यात्रा की थी। अहिंसा चेतना का जागरण और नैतिक मूल्यों का विकास इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था। अहिंसा यात्रा के उस समय मुंबई भिंडी बाजार से प्रसंग को समझाया। वह यात्रा एक महत्त्वपूर्ण यात्रा हुई थी। मर्यादा महोत्सव भी था।

जाति-संप्रदाय ये चीजें भी हिंसा की निमित्त बन सकती हैं। परंतु अहिंसा की चेतना हो तो जाति-संप्रदाय हिंसा के कारण न भी बने। दुनिया में अनेक संप्रदाय और जातियाँ हैं। ये हिंसा के कारण न बने, यह अपेक्षा है। अहिंसा की बात बताने वाले लोग मिलते हैं कि लोगों को कुछ ज्ञान मिले। प्रेरणा मिले, जितना हो सके हिंसा से हटकर के अहिंसा की ओर आगे बढ़ें।

अहिंसा की चेतना, अहिंसक जीवनशैली, अहिंसा प्रशिक्षण ऐसे तत्त्व हैं जो हिंसा के अंधकार को दूर करने वाले और अहिंसा का दीप जलाने वाले होते हैं। आदमी में सहिष्णुता-अभय हो तो निमित्त भले हिंसा के मिल जाएँ पर वे निमित्त हिंसा को नहीं पैदा कर सकते, वे निमित्त अप्रभावी हो जाते हैं। आदमी अहिंसा के पथ पर चलने का प्रयास करता है।

गृहस्थ जीवन में संपूर्ण अहिंसा की बात मुश्किल है, तो संकल्पजा हिंसा को छोड़ने का प्रयास रहे। आदमी आदमी से मैत्री भाव रखे।

बात-बात में आदमी उग्रता में चला जाता है, तो हिंसा की भावना पैदा हो जाती है। कई बार बिना आधार के भी आदमी उग्र हो जाता है, यह एक दृष्टांत से

समझाया।

बुद्धिमान और समझदार आदमी भी हिंसा में प्रवृत्त हो सकता है। आज का मीडिया भी कुछ हिंसा की ओर धकेलने वाला हो सकता है। मीडिया का उज्ज्वल पक्ष भी है। कितनी अच्छी जानकारियाँ मिल जाती हैं। फूल के साथ काँटे भी हो सकते हैं। बुराई से बचने का प्रयास रहे। बच्चों में अहिंसा के संस्कार पुष्ट हो, ऐसा प्रयास हो। ज्ञानशाला आदि इसके माध्यम हैं। कार्यक्रम संपन्नता के साथ अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह को विदाई दी जा रही है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि दुनिया में कोई भारी नहीं बनना चाहता। संसारी जीवों के अनंत-अनंत कर्म प्रदेश लगे हुए हैं, वो आत्मा को भारी बना रहे हैं। जब हमारा कर्मों का संचय खत्म हो जाएगा, आत्मा हल्की होकर मोक्ष को प्राप्त हो जाएगी।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत अणुव्रत गीत का संगान हुआ। अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा के संयोजक अभिषेक कोठारी ने अहिंसा के महत्त्व को बताया। श्रीडूंगरगढ़ के एक मुस्लिम परिवार मधुर बेंड से मोहम्मद शाकिल रमजान ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

अभातेयुप का ५५वें वार्षिक अधिवेशन का शुभारंभ

अभातेयुप के महामंत्री मनीष दफ्तरी ने २०१६-२१ के कार्यकाल का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने अपने सफलतम कार्यकाल के लिए पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। आवश्यकता आविष्कार की जननी है, इस सूत्र को साकार किया युवाशक्ति ने।

अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ने बताया कि पूज्यप्रवर के सान्निध्य में इस शतशायी संस्था ने अभूतपूर्व विकास किया है। ये वह कार्यकर्ता है, जिनमें धैर्यता है, गंभीरता है, शौर्यता है, वीर्यता है। संघ और संघपति के प्रति आस्था में इनकी घनीभूतता है। कितने कार्य और योजनाओं को इन्होंने संपादित किए हैं। हर सेवा में ये समर्पित हैं। इनके उत्साह और जोश को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। गुरुदेव आपकी ऊर्जा शक्ति से ही ये सारा कार्य कर पाते हैं।

इस प्रसंग पर परम पावन युवा सम्राट ने आशीर्वचन कृपा करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में चार चीजें अनर्थ की निमित्त बन सकती हैं। पहली चीज है—यौवन-जवानी, दूसरी—धन-संपत्ति, तीसरी—प्रभुत्व-सत्ता, और चौथी बात है—अविवेकता।

यौवन, पैसा या सत्ता के साथ अविवेक जुड़ जाए तो अनर्थकारी बन सकते हैं। वरना जवानी, पैसे और सत्ता की उपयोगिता हो सकती है। तेयुप के युवकों में तारुण्य होता है। युवाशक्ति को ऐसा माध्यम मिल गया है, जो संस्था युवाओं की है। युवा व्यक्ति जिसके पास शक्ति भी सामान्यतया होती है, शारीरिक बल होता है। जिससे वह अच्छा कार्य भी कर सकता है।

अभातेयुप को गृहस्थों के संदर्भ में देखें तो तेरापंथ समाज की धर्म-सेना है। सेवा में काम आती है। कार्य के प्रति लगन भी है, निष्ठा भी है। अच्छा उपयोग इस सेना का किया जा सकता है। कार्यकाल संपन्न होता है, तो एक टीम का जाना व नई टीम का आना होता है। वर्तमान टीम ने काम किया है। वर्तमान टीम के अध्यक्ष को कल्याण परिषद-संयोजक का दायित्व भी दिया गया। कोरोना काल में संयोजक संदीप को ज्यादा दायित्व मिला।

आदमी को व्यवस्थानुसार निवृत्त भी होना होता है। एक चीज से निवृत्त बने तो और किसी से प्रवृत्त बन जाएँ। नई टीम भी खूब अच्छा काम करे। वर्तमान टीम ने जो काम किया, तटस्थ बनकर संतोष का अनुभव करें। संतोष और आगे का संकल्प दोनों योग हैं। टीम से काम होता है। अध्यक्ष-मंत्री अकेला कितना काम करें। युवक परिषद के सदस्यों में खूब आध्यात्मिक उत्साह भावना रहे, अच्छा काम आगे बढ़ता रहे।

अभातेयुप की टीम ने जैन संस्कार विधि की पुस्तक श्रीचरणों में अर्पित की। संजय जैन ने अपनी भावना रखी। अपने पिता स्वर्गीय महेंद्र जैन की अंतिम इच्छा के अनुसार आचार्यश्री महापूज जी की कृति को पूज्यप्रवर को अर्पित किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि अहिंसा सबके लिए कल्याणकारी होती है।

वर्तमान भविष्य का निर्माता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ६ अक्टूबर, २०२१

आगमवेत्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ठाणं आगम के दसवें स्थान के १३३वें सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि दस ऐसे कारण हैं जिनसे जीव कल्याणकारी कर्म का बंधन करते हैं, कल्याणकारी कर्म करते हैं। ऐसे अच्छे प्रयोग-व्यवहार हैं, जिनसे भविष्य में हित सन्निहित हो जाता है। अच्छा और शुभ होता है।

ये दस चीजें हैं, उनमें पहली चीज है—अनिदानता—भौतिक समृद्धि के लिए साधना का विनियम न करना। निदान यानी भौतिक समृद्धि के लिए साधना को बेचना होता है। निदान कराने, वापस प्रतिक्रमण-आलोचन हो जाए तब तो वो बात समाप्त हो जाती है। आलोचना नहीं तो वह निदान बना रहता है और फल भी देता है। शीलव्रत जो बहुत आध्यात्मिक फल देने वाले हैं, उनको खत्म कर जो सुख पाना चाहता है। तपस्वी है, पर धृति से दुर्बल है वो थोड़े के लिए बहुत खो देता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

केवल ज्ञान-केवल दर्शन संपन्न आत्मा अपने आपमें पूर्ण होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ५ अक्टूबर, २०२१

आगम ज्ञान प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देषणा देते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में शास्त्रकार ने इस सृष्टि के संदर्भ में और ज्ञान के संदर्भ में एक बात बताई है।

दस चीजें इस सृष्टि की बताई हैं—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीर मुक्त जीव, परमाणु पुद्गल, शब्द, गंध, वायु, यह जिन होगा या नहीं और यह सभी दुःखों का अंत करेगा या नहीं। इनको देखना सामान्य अवबोध है, जानना विशेष अवबोध है। छद्मस्थ इन दस चीजों को सर्वभावेन न जानता है, न देखता है।

प्रश्न है कि छद्मस्थ कौन होता है? छद्म यानी आवरण। दो कर्मों का आवरण के रूप में नाम है—ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय। ये दो कर्म आवरण डालने वाले हैं। जिसके इन दो कर्मों का उदय है, वह व्यक्ति छद्मस्थ है। यह एक कसौटी है। ये नहीं है, तो वह केवली है।

छद्मस्थता और केवली ये ज्ञान के संदर्भ में हैं। ये दोनों विलोम शब्द हैं। छद्मस्थ और केवली है, उनकी मुख्य नियामकता ज्ञान है। संपूर्ण ज्ञान है, तो केवली और असंपूर्ण ज्ञान है, तो छद्मस्थ। अंतराय तो प्रासंगिक चीज में है। ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय ये दोनों कर्म एक साथ ही जाते हैं, क्षय को प्राप्त होते हैं, आगे-पीछे नहीं।

छद्मस्थ के भी चार प्रकार बना सकते हैं—(१) वह जीव जिसके पास मति, श्रुत ज्ञान तो है, बाकी ज्ञान नहीं। (२) जिसके पास मति, श्रुत, अवधिज्ञान या विभंगमज्ञान है। (३) मति, श्रुत, मनःपर्यव ज्ञान है। (४) मति, श्रुत, अवधि व मनःपर्यव ज्ञान वाला। इस तरह छद्मस्थ के चार प्रकार हो गए।

शास्त्रकार ने कहा है कि ये दस बातें छद्मस्थ न देखता है, न जानता है। अवधि ज्ञानी भी धर्मास्तिकाय को संपूर्ण भावेन नहीं जान सकता। अवधिज्ञान रूपी द्रव्य है, धर्मास्तिकाय अरूपी द्रव्य है। इसी तरह अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीर मुक्त जीव

को नहीं जान सकता। ये चार चीजें अमूर्त है। इनको चारों ही प्रकार के छद्मस्थ संपूर्ण भावेन नहीं जान सकते, न देख सकते।

परमाणु पुद्गल, शब्द, गंध, वायु ये चार चीजें रूपी हैं। रूपी तो अवधिज्ञान का विषय है, फिर भी छद्मस्थ इनको नहीं जान सकता।

यह जिन होगा या नहीं, यह भी प्रत्यक्ष ज्ञान है, वो केवल ज्ञानी को तो हो जाए, बाकी सबको प्रत्यक्ष-साक्षात्कार रूप में ज्ञान न भी हो। अवधि ज्ञानी जान भी पाए, न भी जान पाए, निश्चय में केवली जाने। सर्व भावेन: वह न जाए कि वह जिन होगा या नहीं। इसी से जुड़ा हुआ है कि वह सभी दुःखों का अंत करेगा या नहीं।

जो केवलज्ञानी होता है, केवलज्ञान, केवलदर्शन संपन्न साधु है या जीव-आत्मा है, वह इन दसों चीजों को सर्वभावेन: जान लेती है। परमाणु-पुद्गल, शब्द, गंध और वायु ये मूर्त होने पर भी अदृश्य है। मूर्त होना एक बात है, अदृश्य होना एक बात है। शास्त्रकार ने यहाँ दस बातें अदृश्य-अदृश्य को लिया है, दृश्य को नहीं लिया। अदृश्य में कई मूर्त हैं, पर वो अदृश्य हैं। वे चक्षु के द्वारा साक्षात् ज्ञान नहीं होती।

इस सारे प्रकरण से हम ज्ञान की अनंत परिक्रमा का प्रबोधन, अनुभव कर सकते हैं कि अनंत ज्ञान होता है, वह कितना विराट है, यह कहना भी उचित है या नहीं, अपने आपमें अनंत है। केवल ज्ञान-केवल दर्शन संपूर्ण ज्ञान, संपूर्ण दर्शन होता है। यह एक बाजोट-चोकी और धूल के उदाहरण से समझाया।

सामान्य जो छद्मस्थ है, उनके मति, श्रुत ज्ञान तो संभव है, पर मति-श्रुत ज्ञान में भी तारतम्य काफ़ी हो सकता है। ज्ञान-ज्ञान में अंतर हो सकता है। क्षयोपशम का तारतम्य रह सकता है। एक विशेष ज्ञानी है, एक सामान्य ज्ञानी है। सब में ज्ञान का वैदुष्य समान हो जाए तो बढ़िया बात है, पर अंतर हो सकता है। हमारा ज्ञान तत्त्वज्ञान आदि के रूप में निर्मल बने। वह प्रयास औचित्य के साथ जितना किया जा सके, हमें करने का प्रयास करना चाहिए। (शेष पृष्ठ ४ पर)

धर्मसंघ में मुमुक्षु तैयार करने... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

हम लोग अहिंसा यात्रा के नाम से यात्रा कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा आचार्य महाप्रज्ञ जी ने भी की थी। वे गुजरात में अहमदाबाद-सूरत तथा मुंबई भी पधारे थे। अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्यों को समझाया। आचार्य महाप्रज्ञ जी मुंबई में शेखी महल जो सयदना जी का मकान है, वहाँ भी पधारे थे। गुरुदेव से काफ़ी लंबा वार्तालाप उनसे हुआ था। तब से दाउदी बोहरा समाज के साथ तेरापंथ का कुछ निकटता का संपर्क हो गया। बाद में बोहरा समाज के लोगों से समय-समय पर मिलना होता।

यदा-कदा आप जैसे गृहस्थ लोगों से मिलना होता रहता है। सद्भावना और मैत्री भाव रखो, हिंसा में मत जाओ। विभिन्न धर्म-जातियाँ और भाषाएँ हैं, पर यह भिन्नता हिंसा का कारण न बने। भिन्नता हो सकती है, फिर भी मैत्री व सौहार्द का भाव रखा जाए। अणुव्रत में भी यही बात आती है—संप्रदायिक सहिष्णुता।

आचार्य महाप्रज्ञ जी २००२ में गुजरात अहमदाबाद पधारे थे। उस समय कुछ हिंसा का माहौल था। उन्होंने उस समय दोनों धर्म के लोगों से कहा था

कि हिंसा में मत जाओ। शांति में रहते हैं, तो विकास होता है। अशांति से नुकसान होता है। उस समय वहाँ जगन्नाथ यात्रा का प्रसंग भी था। उन्होंने कहा था कि किसी के कार्य में बाधा नहीं डालनी चाहिए। सहयोग करो, न करो अलग बात है। बाद में वहाँ अच्छा माहौल बन गया था।

जीवन में अहिंसा-मैत्री का भाव रहे। कार्य में ईमानदारी रहे। नशे से आदमी बचे ताकि यह जीवन भी अच्छा और आगे भी अच्छा होने की संभावना है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम हैं, जो आप लोग गृहस्थ हैं, आपके जीवन में रहें तो आपकी आत्मा अच्छी, जीवन अच्छा व समाज में शांति रह सकती है। इतने आप बोहरा समाज के लोग आए हैं, आपसे मिलकर अच्छा लगा। जीवन में शांति रहे, पवित्रता बनी रहे।

दाऊदी बोहरा समाज के उदयपुर के प्रतिनिधि अली असगर साहब जिन्हें आमिल साहब कहते हैं, इनसे कोई पूछता है कि आपका मजहब क्या है? तो ये कहते हैं कि मेरा मजहब दो हथेलियाँ हैं, जो जुड़े तो पूजा और खुले दुआ बन जाती है। अली असगर साहब ने कहा कि दाऊदी बोहरा समाज के ५३वें गुरु पावन पवित्र सयदना साहब ने आमंत्रित किया है, विशेष रूप

वर्तमान भविष्य का निर्माता...

(पृष्ठ २ का शेष)

दूसरी चीज है—दृष्टि संपन्नता—सम्यक्-दृष्टि की आराधना। सम्यक् दृष्टि संपन्नता है, तो भविष्य के लिए कल्याणकारी चीज है। तीसरी चीज है—योग वाहिता-समाधिपूर्ण जीवन। आगम-स्वाध्याय के साथ उपधान तप करना। चौथी चीज है—शांतिक्षमणता—समर्थ होते हुए भी क्षमा करना। पाँचवीं चीज है—जितेंद्रियता—इंद्रियों को जीत लेना, इंद्रिय-संयम रखना, विजितेन्द्रिय बन जाना।

छठी चीज है—ऋजुता—छल-कपट नहीं करना, सरल रहना। सातवीं चीज है—अपार स्वस्थता—ज्ञान, दर्शन, चारित्र के आचार की शिथिलता न रखना। आठवाँ है—सुश्रामण्य-साधु साधुपन अच्छा रखे। निर्मल रखें, पाप श्रमण न बने। नवमी चीज है—प्रवचन वत्सलता—आगम और शासन के प्रति प्रगाढ़ अनुराग। दशमी चीज है—प्रवचन-उदृभावना। आगम और शासन की प्रभावना। आध्यात्मिक रूप में शासन की प्रभावना करना।

इस प्रकार के व्यवहारों से भविष्य के लिए एक कल्याणकारी स्थिति तैयार हो जाती है। वर्तमान भविष्य का निर्माता है। वर्तमान हमारा भाग्यविधाता है। वर्तमान हमारा जैसा होगा, उसके आधार पर भविष्य हमारा टिका हुआ होगा। इसलिए भावी कल्याण भावी भद्रता के लिए हमारा वर्तमान अच्छा होना चाहिए। वर्तमान अच्छे के संदर्भ में ये दस चीजें आगम में बताई गई हैं। ये हमारे लिए अनुसरणीय है।

इन दस चीजों में कषाय-मंदता, कषायहीनता, क्षमा और ऋजुता की बात है। ऐसे आचरणों से भावी कल्याण की स्थिति निष्पन्न हो सकती है। आचार्य भिक्षु के जीवन को देखें, उनके आगम के प्रति, वीर वाणी के प्रति कितना निष्ठा का भाव रहा होगा। श्रीमद् जयाचार्य ने कितना आगम का मंथन किया होगा। ऐसे हमारे आचार्य हुए हैं, जिनका आगम के प्रति अनुराग रहा होगा।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने आगम संपादन का कार्य किया था। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने भी आगम संपादन में कितना सहयोग किया होगा, पसीना बहाया होगा। हम इन दस चीजों को कितना जीवन के व्यवहार में प्रयुक्त कर सकें, ताकि हमारा भावी कल्याण हो। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने जीवन के अंतिम वर्षों में कहा था कि मैं तो अगले जन्म की ओर ध्यान दे रहा हूँ।

अवस्था आ जाए या शरीर की वैसी स्थिति हो जाए तो भावि भद्रता, भविष्य का कल्याण की ओर ध्यान देना चाहिए। जीवन की शैली को ढालने का प्रयास करें। व्यक्तिगत साधना में समय का नियोजन करें। सारी बात का सारांश है कि मेरा भावी कल्याण हो। गृहस्थ भी धार्मिक-दृष्टि से सक्रिय बने। समय व्यर्थ न गँवाएँ। स्वाध्याय करें। भावों को शुद्ध बनाएँ।

अणुव्रत भी वर्तमान को अच्छा बनाने की बात है। ये दस बातें भविष्य के कल्याण की दृष्टि से अच्छी चीजें हैं। इनको जीवन में जितना उतारा जा सके, उससे हित प्राप्त हो सकता है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि तप मनुष्य के लिए कामधेनु, चिंतामणि-रत्न के समान है। जिसके पास ये दोनों होते हैं, उसे वह प्राप्त हो जाता है, जो वह चाहता है। तप ही मनुष्य का तिलक है, विभूषा है। तप से निर्जरा होने से, आत्मा की विशुद्धि होती है और अपने लक्ष्य को निकट बना लेता है।

साध्वीवर्या जी ने चौथी मंगलभावना 'धी संपन्नोऽम स्याम' की व्याख्या करते हुए कहा कि जिस व्यक्ति को मंजिल-लक्ष्य पाना है, उसे धृति संपन्न, धैर्य संपन्न बनना होगा। हीं, श्रीं, धी संपन्न बनने के लिए धृति संपन्न बनना होगा। ठहराव से सफलता मिलती है।

तपस्वी संत मुनि पारसकुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। भीलवाड़ा तेरापंथ महिला मंडल ने कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि कर्मों के आधार पर जीव सुख या दुःख का अनुभव करता है।

से आप सभी को शुभेच्छा की भेंट फरमाने को हमें निर्देश फरमाया है।

मुस्लिम समाज की पवित्र पुस्तक कुरान में अल्ला-ताला फरमाते हैं कि तुम सब नेकी और धर्म परायणता से सहयोग करो। भारत में अनेक भाषाएँ व परिवेश वाले लोग रहते हैं। बहुरंगी कपड़े में भी ये देश एक रंगा दिखता है। विभिन्न आस्थाओं के बीच सभी धर्म समान दिखते हैं। ये समानता सम्मान से उभरी हुई भावना है।

व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया एवं अणुव्रत समिति से लक्ष्मी ने अली असगर साहब व अन्य मेहमानों का स्वागत किया। प्रतीक चिह्न व साहित्य से सभी का सम्मान किया गया। मुनि मनन कुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान एवं सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित शोध प्रबंधन—बाल दीक्षा एक अध्ययन—शोधार्थी मुनि विनोद कुमार 'विवेक' पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे जैन शासन में बाल दीक्षाएँ भी होती रही हैं। ये बाल दीक्षा के संदर्भ में जो

पुस्तक आई हैं, इसमें न्यायालय संबंधी व विधि-विधान संबंधी जानकारियाँ हैं जो पढ़ने से आशा है, बाल दीक्षा के संदर्भ में जानकारियाँ प्राप्त हो सकेंगी। डॉ० मुनि विनोद कुमार जी अपने ज्ञान का, सेवा का अच्छा यथासंभव विकास करते रहें। मंगलभावना। जैविभा जो ऐसे ज्ञान के कार्यों में अपना योगदान देती रहती है। जैविभा भी धार्मिक, आध्यात्मिक कार्य-विकास करती रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने चारित्र के पाँचों प्रकारों की विवेचना करते हुए कहा कि जिस व्यक्ति को चारित्र प्राप्त हो जाता है, वो वीतरागता की ओर अग्रसर हो जाता है। ज्ञान और आचरण के द्वारा व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। ज्ञान को बोध प्राप्त होता है और आचरण से वह आत्मरमण करने लग जाता है। साधक को सतत प्रयास करना चाहिए कि मैं शीघ्रातिशीघ्र कषायमुक्त बनूँ।

♦ आप किसी को मानते हो या नहीं मानते हो पर आप जो कुछ करते हो, उसमें नैतिकता व प्रामाणिकता को रखने का प्रयास करना चाहिए।

— आचार्यश्री महाश्रमण



महिला मंडल के विविध आयोजन

वैक्यूम क्लीनर की ७ मशीनें स्कूलों और हॉस्पिटल में दी

दिल्ली।

महिला मंडल, दिल्ली की बहनों ने वैक्यूम क्लीनर मशीन स्कूलों में दी। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। संकल्प गीत द्वारा बहनों ने पूरे वातावरण को गुंजायमान किया। अध्यक्ष मंजु जैन ने पधारें सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत-अभिनंदन किया। विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने अपने वक्तव्य में तेरापंथ धर्मसंघ की विशेषता को बताया और साथ ही कहा कि हम हमेशा आपके साथ हैं। पूर्व अध्यक्ष तारा बैगानी ने कहा कि हमारा धर्मासंघ आध्यात्मिक विकास के साथ सामाजिक विकास के लिए भी प्रयत्नशील है। दिल्ली की क्षेत्रीय प्रभारी सुनीता जैन ने बताया कि किस प्रकार दिल्ली महिला मंडल वर्षों से समाज के लिए अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

शाहदरा सभा अध्यक्ष राजेंद्र सिंधी ने कहा कि महिलाएँ बहुत अच्छा काम कर रही हैं, पिछले साल भी स्वच्छ भारत अभियान के तहत 9५ सेनेटरी पैड डिस्ट्रॉय मशीनें दी गई थीं। इस बार वैक्यूम क्लीनर देकर पर्यावरण की सुरक्षा कर रही हैं। सभी स्कूलों के प्रिंसिपल ने दिल्ली महिला मंडल को धन्यवाद ज्ञापित किया एवं आश्वासन दिया कि मशीन को हम धरोहर के रूप में रखेंगे। कार्यक्रम में सभा-संस्थाओं के अनेक

पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण की उपस्थित रही। कार्य की सफलता में पूर्वी दिल्ली संयोजिका मंजु बांठिया का विशेष योगदान रहा। अंत में यश बोथरा ने सभी गणमान्य व्यक्तियों एवं महिला मंडल की बहनों का आभार ज्ञापन किया।

२४ तीर्थकरों के सवा लाख जप अनुष्ठान परिसंपन्न

नोएडा।

महिला मंडल द्वारा आयोजित २४ तीर्थकर सवा लाख जप अनुष्ठान सभक्ति संपन्न हुआ। देव, गुरु व धर्म के प्रति श्रद्धा व पूर्ण समर्पित नोएडा श्रावक समाज को साधुवाद। अध्यक्ष कविता लोढ़ा ने जप संयोजिका कुसुम बैद व दीप्ति बैद को साधुवाद दिया। जिन्होंने ४८ दिनों तक इस जप को व्यवस्थित रूप से चलाने में सतत जागरूकता रखी। मंत्री दीपिका चोरड़िया ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए बताया कि ७४ जनों ने माला जाप में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। प्रतिदिन जप संख्या सवाया ही रही।

दंपति शिविर का आयोजन

जीन्द।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में दंपति शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के माध्यम से किया। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष उपासिका कांता मित्तल ने प्रायोजक डॉ० पी०सी० जैन तथा आए हुए सभी दंपति जोड़ों का स्वागत किया।

साध्वी सुमंगलाश्री जी द्वारा दंपति जीवन में सुखपूर्वक कैसे रहना चाहिए इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने सभी के वैवाहिक जीवन में क्या कर्तव्य होने चाहिए इस बात पर विस्तार से प्रकाश डाला। तंबोला प्रतियोगिता, विज प्रतियोगिता, बेस्ट कपल बने प्रतियोगिता का संचालन कन्या मंडल की बहनों-प्रेक्षा जैन, मोहिनी जैन, रक्षिता जैन ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष मीना जैन ने किया।

मंच का संचालन तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया। महिला मंडल, जीन्द की बहनों ने समाज में विशिष्ट सेवा प्रदान करने के लिए पंजाब केसरी जीन्द के पत्रकार महावीर मित्तल, दिशा मिशन हॉस्पिटल के संचालक डॉ० सुरेश जैन, डॉ० ममता जैन, मीनाक्षी जैन हॉस्पिटल के संचालक डॉ० अनिल जैन, डॉ० मीनाक्षी जैन को मोमेंटो के द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के प्रायोजक डॉ० पी०सी० जैन, राजेश जैन को भी साहित्य से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की प्रतियोगिता के सभी विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। तेरापंथ महिला मंडल, जीन्द की बहनों द्वारा दो सुंदर नाटकों की प्रस्तुति भी दी गई।

पर्युषण का ठाठ

बोलाराम।

साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में पर्युषण पर्व एक झलक रखा गया। साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि पर्युषण जिनशासन का प्रमुख पर्व है। पर्युषण आत्मावलोकन एवं प्रकाश का पर्व है। अंतर जगत की यात्रा करने एवं भीतर को आलोकित करने का आध्यात्मिक पर्व है। साध्वी ज्योतिशशा जी ने कहा कि जो व्यक्ति खाने में संयम करता है। वह हमेशा प्रसन्न रह सकता है। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मधुर गीत का संगान किया। बोलाराम के भाई-बहनों ने उपवास का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम की बहनों ने सुमधुर गीत से किया। मंच का संचालन साध्वी ज्योतिशशा जी ने किया।

पर्युषण पर्व के निर्धारित विषय-स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, मौन दिवस, जप दिवस, ध्यान दिवस, अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वी काव्यलता जी के प्रेरक वक्तव्य भाव विभोर करने वाले थे। साध्वी सुरभिप्रभा जी द्वारा मधुर गीत एवं सामायिक मौन दिवस पर वक्तव्य हुआ।

तेरापंथ महिला मंडल, युवती मंडल, तेयुप, हैदराबाद, टीपीएफ की युवा शक्ति, तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद आदि सभा-संस्थाओं द्वारा समय-समय पर गीत, वक्तव्य हुए। तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का प्रयोग की प्रस्तुति दी।

तेरापंथ सभा बोलाराम के अध्यक्ष रतन सुराणा ने कहा कि साध्वीश्री जी के अथक श्रम से हमारे बोलाराम में जो धर्म की बहार आई वह शब्दातीत है। पर्युषण पर्व में रतनलाल, मनीष पटावरी, पंकज संचेती, मिरंज सुराणा, राहुल सुराणा आदि युवकों का श्रम सराहनीय रहा। तेमम की अध्यक्ष दमयंति सुराणा, मंत्री स्नेहा लुणावत आदि बहनों का सहयोग सराहनीय रहा। साध्वी काव्यलता जी ने एकासन का मासखमण सानंद संपन्न किया। पर्युषण पर्व में साध्वीश्री जी के साथ साध्वी ज्योतिशशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी का श्रम भी शब्दातीत रहा।

पर्युषण पर्व में ४ अठाई, 9 नौ, ३५ तेल की तपस्या। २० तेरापंथी परिवार के होते हुए भी संवत्सरी पर्व पर ६० पौषध सानंद संपन्न हुए। इस प्रकार साध्वीश्री जी का बोलाराम पर्युषण पर्व आध्यात्मिक दृष्टि से आलोकमयी रहा।

टीकाकरण शिविर

राजारजेश्वरी नगर।

तेरापंथ सभा/ट्रस्ट, तेयुप एवं तेमम के संयुक्त उपक्रम 'कोरोना मुक्त भारत' के तहत निःशुल्क वैक्सीन शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। शिविर का आयोजन सरकारी अस्पताल बंगारपानगर के सहयोग से किया गया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि इस महामारी से बचाव के लिए टीकाकरण एक सशक्त उपाय है। आर०आर० नगर, तेरापंथ समाज सतत जागरूकता के साथ अपने इस कर्तव्य का निर्वाह कर रही हैं। सभाध्यक्ष मनोज डागा, मंत्री विक्रम मेहर, राजेश भंसाली, राजेश

छाजेड़, डॉ० प्रकाश छाजेड़, कमल दुगड़, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, मंत्री विकास छाजेड़, अन्य सदस्यों सहित, महिला मंडल से बीना कोठारी, वंदना भंसाली, पूनम दक, पूनम दुगड़, ममता दुगड़, नम्रता छाजेड़ आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

बी०बी०एम०पी० हेल्थ ऑफिसर डॉ० पुष्पलता एवं उनकी टीम ने अच्छा कार्य किया। इस शिविर में कोविशील्ड एवं कोवैक्सीन दोनों तरह के वैक्सीन के प्रथम एवं द्वितीय दोनों डोज लगाए गए। समाज के सभी वर्गों के लिए आयोजित इस शिविर में २३० लोगों को वैक्सीन लगाए गए।

मर्यादा एवं अनुशासन विषयक कार्यक्रम

गांधीनगर।

तेरापंथ भवन में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ का संविधान, मर्यादा और अनुशासन विषय पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि तेरापंथ के नायक आचार्य भिक्षु ने अपनी अंतरप्रज्ञा से आज से ३०० वर्ष पहले तेरापंथ धर्मसंघ का संविधान बनाया जिसका मुख्य आधार है सर्व साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें। सभी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएँ वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के कुशल नेतृत्व में विकास के पायदान तय कर रहे हैं। इस उपलक्ष्य में साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी ने गण में अनुशासन दीप जलाया, गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में दीपक सेठिया ने ६ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। योसना, भुवि, माही परिन व सेठिया परिवार की बहनों ने तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दर्शितप्रभा जी ने किया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

* अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
* श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
* श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनू-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
* श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
* श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अहम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
* श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
* श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
* श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

केवल ज्ञान-केवल दर्शन संपन्न आत्मा...

(पृष्ठ ३ का शेष)

आज आश्विन कृष्णा चतुर्दशी है। यह मर्यादा-हाजरी वाचन का दिवस है। पूज्यप्रवर ने मर्यादा पत्र का वाचन करवाया। नवदीक्षित बारह साध्वियों से लेख पत्र का वाचन करवाया व 9२-9२ कल्याण की बख्शीष करवाई। सामुहिक लेख पत्र का वाचन हुआ। ७ तारीख से नवरात्रा का समय शुरू हो रहा है। नवाहिनक (अष्टाहिनक) जप का कार्यक्रम की जानकारी प्रदान करवाई। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। मुनि प्रतीक कुमार जी ने अठाई का प्रत्याख्यान लिया।

भाव निर्झर एक पुस्तक जो तनसुख बैद ने लिखी है, पूज्यप्रवर को अर्पित की। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि शुद्ध भावों का निर्झर बहता रहे। तनसुखलाल बैद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। राहुल रांका, नव्या बोलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि जो जीव चारित्र संपन्न है, वह शैलेषी अवस्था को प्राप्त कर, सारे कर्मों का क्षय कर सिद्ध मुक्त बन जाता है। सारे दुःखों का अंत कर अपने साध्य को प्राप्त कर लेता हो, सम्यक् चारित्र मोक्ष का साधन बनता है। अज्ञान द्वारा किया जाने वाला तप मोक्ष तक नहीं पहुँचता। तप अध्यात्म साधना का अंग है। तपस्या से व्यक्ति अपने कर्म का क्षय कर सकता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि गुरु का विश्वास अर्जित करना बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। नियम का सम्मान करो, विश्वास अपने आप बढ़ेगा।

पर्युषण महापर्व अहंकार से अहंम की यात्रा

विजयनगर-बैंगलोर।

महापर्व पर्युषण पर्व का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। महिला मंडल की ओर से मंगलाचरण किया गया। साध्वीश्री जी ने खाद्य संयम दिवस पर कहा कि मनुष्य का शरीर संयम व नियम पर चलने पर व संतुलित आहार करने पर स्वास्थ्य प्राप्त होता है। साध्वी आस्थाश्री जी ने तीर्थकरों के विशेष गुणों का वर्णन किया। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने खाद्य संयम दिवस की विशेषता पर प्रकाश डाला। साध्वी विज्ञप्रभा जी ने संतुलित आहार और पौष्टिक आहार का पूर्ण रूप से ज्ञान अवगत करवाया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी उपस्थित थे। संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

स्वाध्याय दिवस : द्वितीय दिवस स्वाध्याय दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने स्वाध्याय दिवस पर कहा स्वा यानी स्वयं अध्याय यानी आत्मा के प्रति जागृत होना। बाहर की चकाचौंध दुनिया से विमुख होकर अपने भीतर आत्मा को जानना वही स्वाध्याय है। भीतर की चेतना को जगाना व आत्मा का विकास करना। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने स्वाध्याय गीतिका के माध्यम से सभा को उद्बोधित किया। इस अवसर पर अहंम भवन के अध्यक्ष बहादुर सेठिया ने सभी का स्वागत किया। प्रतिक्रमण पुस्तक के प्रायोजक परिवार से मदन एवं कैलाश बोरणा ने साध्वीश्री जी को पुस्तक भेंट की। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष राजेश चावत, सभा परिवार तेयुप, महिला मंडल के सदस्य उपस्थित थे। संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

सामायिक दिवस : तृतीय दिवस सामायिक दिवस पर साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में कार्यक्रम की शुरुआत विजय स्वर संगम के मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात साध्वी आस्थाश्री जी द्वारा अभिनव सामायिक का विधिवत आगाज किया। स्वाध्याय के प्रयोग सर्वप्रथम साध्वी विज्ञप्रभा जी द्वारा प्रेरणा पाथेय प्रदान किया गया। साध्वी प्रमिला कुमारी जी द्वारा स्वाध्याय करवाया गया। इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, निवर्तमान संगठन मंत्री पवन मांडोत, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र देवा, अशोक कोठारी, उपाध्यक्ष क्रमशः मनोज बरड़िया, प्रवीण गन्ना, मंत्री विकास

बांठिया, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा, हितेश भटेवरा एवं सभी परिषद के साथियों के साथ-साथ तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल के सभी पदाधिकारी एवं अन्य उपस्थित रहे।

वाणी संयम दिवस : वाणी संयम दिवस पर कन्या मंडल की ओर से मंगलाचरण किया गया। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने वाणी संयम पर कहा कि व्यक्ति को सोच-समझकर बोलना चाहिए। आवश्यक होने पर बोलना चाहिए, निवेदन की भाषा में बोलना चाहिए। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने उदाहरण द्वारा वाणी विवेक के महत्त्व को बताया। इस अवसर पर महासभा राष्ट्रीय सहमंत्री प्रकाश चंद लोढ़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष राजेश चावत एवं मंत्री मंगल कोचर ने अपनी भावना व्यक्त की। सभा, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

अणुव्रत चेतना दिवस : अणुव्रत चेतना दिवस पर किशोर मंडल की ओर से मंगलाचरण हुआ। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने भगवान महावीर के २७ भव का विस्तार से वाचन किया। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने अणुव्रत गीतिका से सभी को भाव-विभोर किया। इस अवसर पर सभा मंत्री मंगल कोचर, तेयुप मंत्री विकास बांठिया, महिला मंडल सुमित्रा बरड़िया ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी उपस्थित थे।

जप दिवस : साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में जप दिवस के अवसर पर ज्ञानशाला की ओर से मंगलाचरण हुआ। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने उद्बोधन दिया। सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने गीत के स्वरों से तपस्वियों की अनुमोदना की। तेयुप के अध्यक्ष अमित दक, महिला मंडल के अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने भी अभिनंदन किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री मंगल कोचर ने किया। सभा, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

ध्यान दिवस : साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में ध्यान दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

प्रेक्षाध्यान साधक की ओर से मंगलाचरण हुआ। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी आस्थाश्री जी ने २३वें तीर्थकर पार्श्वनाथ का वर्णन किया। साध्वी विज्ञप्रभा जी ने ध्यान के महत्त्व को बताया। कार्यक्रम में सभा, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी उपस्थित थे।

संवत्सरी पर्व : साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में पर्युषण पर्व संवत्सरी उत्साह के साथ मनाया गया। तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल द्वारा संयुक्त रूप से मंगलाचरण हुआ। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने संवत्सरी महापर्व के दौरान हम सभी को क्षमा करें एवं अपने मन को शांत करें। साध्वी विज्ञप्रभा जी ने भगवान महावीर के जीवन-दर्शन के बारे में बताया। इस अवसर पर तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी उपस्थित थे।

क्षमापना दिवस : साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी, असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी, शहर में विराजित साध्वी लावण्यश्री जी, शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के प्रति खमतखामणा करते हुए कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने उपस्थित सभी श्रावक समाज के प्रति भी खमतखामणा किया। साध्वी आस्थाश्री जी ने भी इस अवसर पर अपनी भावना प्रेषित करते हुए सभी के प्रति खमतखामणा किया। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने खमतखामणा किया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष राजेश चावत, मंत्री मंगल कोचर, तेयुप अध्यक्ष अमित दक, मंत्री विकास बांठिया, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली, मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने अपनी संपूर्ण टीम एवं सभी श्रावक समाज को खमतखामणा किया। पर्युषण महापर्व संयोजक उम्मेद नाहटा, अहंम मित्र मंडल अध्यक्ष बहादुर सेठिया, अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, वर्तमान कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना, बरखा पुगलिया, मधु कटारिया ने सभी के प्रति क्षमायाचना की। सभा, परिषद, महिला मंडल के सभी पदाधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित थे। संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया ने किया।

भिक्षु भजन संध्या

लिलुआ।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के २१६वें चरमोत्सव दिवस के अवसर पर भजन संध्या का कार्यक्रम तेयुप द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन पंकज नाहटा ने किया। सभी परिवार के विशिष्टजन, महिला मंडल की बहनें, तेयुप के युवा साथी उपस्थित रहे।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी रतनलाल रतन देवी के सुपुत्र एवं पुत्रवधू ललित कुमार प्रियंका तातेड़ के नवजात पुत्ररत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में अभातेयुप संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया व भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण का कार्यक्रम मंगलपाठ के साथ संपन्न करवाया। इस कार्यक्रम के दौरान करणीदान रांका भी सहयोगी के रूप में उपस्थित थे। संस्कारकों द्वारा तातेड़ परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की गईं। इस अवसर पर दोनों परिवारों के सदस्य और समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

साउथ-कोलकाता।

अभातेयुप के तत्त्वाधान में तेयुप द्वारा नव प्रतिष्ठान का उद्घाटन और पूजन जैन संस्कार विधि से आयोजित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं मंगलपाठ के संगान के साथ हुआ। अभातेयुप के संस्कारक महेंद्र दुगड़ ने पूजन का कार्यक्रम संचालित किया। परिषद का प्रतिनिधित्व अध्यक्ष अमित पुगलिया एवं सचिव रोहित दुगड़ ने किया।

कार्यक्रम में पारिवारिक सदस्य उपस्थित थे। तेयुप साउथ कोलकाता के अध्यक्ष अमित पुगलिया ने नए आउटलेट के लिए सीमांत नाहटा एवं उनके परिवारजनों को शुभकामनाएँ दीं।

नामकरण संस्कार

नालासोपारा।

लाइनुं निवासी, नालासोपारा प्रवासी अजित सिंह बैंगानी के निवास-स्थान पर जैन संस्कार विधि में तपस्या सुपुत्री रवि बैंगानी मम्मी खुशबू बैंगानी का जन्म नामकरण समारोह का आयोजन किया गया। जैन संस्कार विधि से जन्मोत्सव का आयोजन संस्कारक पारस बाफना द्वारा विधिवत मंत्रोच्चार के द्वारा संपादित करवाया गया।

इस अवसर पर तेयुप मंत्री दिनेश धाकड़ ने संस्कारक, परिवार जन एवं उपस्थित महानुभावों को शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आयोजित इस सत्र के द्वितीय रक्तदान शिविर तुलसी वाटिका में किया गया, जिसमें कुल ४२ यूनिट रक्त का दान युवा शक्ति ने किया।

शिविर में अपनी सेवाएँ दी उसमें परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, अध्यक्ष विकास सिंधी, उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, मंत्री धीरज मालू, सहमंत्रीद्वय यश दुगड़ व राजीव खटेड़, एमबीडीडी संयोजक विवेक सुराणा आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

शिविर सभा अध्यक्ष एवं परामर्शक संजय सिंधी, सभा मंत्री प्रवीण पगारिया आदि अनेक पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

शिविर की आयोजना में पूर्वांचल सभा व महिला मंडल का विशेष सहयोग रहा। एलायंस क्लब्स इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट १०१ एवं एलायंस क्लब ऑफ एरो सिटी डिस्ट्रिक्ट १०१ का। परिषद ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। रक्तदान शिविर में विशेष श्रम दिया। परिषद की उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी प्रभारी अमित बैद एवं सभी एमबीडीडी संयोजक ने शिविर के प्रायोजक पवन जैन को साधुवाद।



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

शिविर साधना

बदली स्थिति, अब है कहाँ सुंदर गुरुकुलवास?
आंशिक पूरक बन सके, शिविरों का आवास।।
चलती है यह प्रक्रिया, वैसे विविध प्रकार।
भिन्न-भिन्न उद्देश्य हैं, भिन्न-भिन्न आधार।।
जागृति-मूलक जै-वि-भा नीड का आयास।
शिविरों की आयोजना होती यथावकाश।।
दशान्हिकी साप्ताहिकी शिविर-साधना शांत।
लाभान्वित निश्चित रहे शिविरार्थी विश्रांत।।



प्रश्न: गुरुकुलवास की परंपरा अब समाप्त हो चुकी है, पर गुरुकुलों में जिस प्रकार व्यक्तित्व का निर्माण होता था, उसकी अपेक्षा आज भी अनुभव की जा रही है। इस स्थिति में हमारे सामने कोई ऐसा दूसरा विकल्प भी है, जो गुरुकुल-परंपरा की पूर्ति कर सके?

उत्तर : गुरुकुलवास की पद्धति अब बदल चुकी है। आज की विचारधारा में वह मान्य भी नहीं है। आज स्वतंत्रता को नए रूप में परिभाषित किया गया है। अनुशासन संबंधी प्राचीन मानदंड अब बदल गए हैं। गुरु और अनुशासन के लिए पुराने समय में जो गौरव था, वह क्षीण होता जा रहा है। वर्षों तक गुरुकुल में साधना करने की बात भी अब कठिन प्रतीत हो रही है। क्योंकि गुरुकुल की अपनी मर्यादाएँ होती हैं। गुरुकुल में रहने वाले को उन मर्यादाओं का हृदय से पालन करना होता है। मर्यादा के पालन में हार्दिकता न हो तो वह बहुत भारी प्रतीत होने लगती है। इस दृष्टि से वर्तमान में गुरुकुल-व्यवस्था की उपयोगिता के आगे एक प्रश्नचिह्न लग गया है। आज गुरुकुल-परंपरा का दूसरा विकल्प है—शिविर-साधना। शिविर इस युग की नई पद्धति है। इन्हें गुरुकुल-पद्धति का पूरक कहा जा सकता है। आजकल शिविरों की समायोजना बहुत होती है। शिक्षा, साधना, चिकित्सा और मनोरंजन आदि क्षेत्रों में शिविरों के प्रयोग हो रहे हैं। यद्यपि प्रत्येक क्षेत्र का शिविर अपनी भूमिका पर होता है। हर शिविर का उद्देश्य भिन्न होता है। उद्देश्य की भिन्नता में परिणाम की भिन्नता स्वाभाविक ही है। फिर भी शिविरों के प्रयोग एक दृष्टि से काफी सफल हो रहे हैं।

जैन विश्व भारती एक विशिष्ट संस्थान है। वहाँ शिक्षा, साधना और सेवा—इन तीनों क्षेत्रों में विशेष प्रयोग किए जा रहे हैं। इन प्रयोगों को व्यवस्थित रूप देने के लिए जैन विश्व भारती समय-समय पर शिविरों का आयोजन करती है। जैन विश्व भारती का साधना केंद्र (तुलसी अध्यात्म नीडम्) इस कार्य के प्रति सजग है। नीडम् के कार्यकर्ता शिविर की पूरी व्यवस्था करते हैं। वे चाहते हैं कि अध्यात्म का जो अज्ञात स्रोत यहाँ खुला है, उससे व्यक्ति लाभान्वित हो। पानी के अभाव में व्यक्ति प्यासा रहे, यह बात समझ में आने वाली है। पर जल के बीच रहकर भी कोई व्यक्ति प्यास से व्याकुल होता रहे, यह बात समझ में नहीं आती। कबीरजी ने भी इस तथ्य के साथ असहमति प्रकट करते हुए कह दिया—‘पानी में मीन पियासी, मोए सुण-सुण आवै हाँसी।’

दिन-रात पानी में रहने वाली मछली प्यासी रहती है, इस बात पर हँसने वाले कबीर ने आगे चलकर लिख दिया—‘यह सब आत्मज्ञान के अभाव में होता है।’ मनुष्य के सामने जितनी भटकन है, जितना विपर्यास है, वह सब आत्म-विमुखता की स्थिति में ही हो सकता है। आत्मोन्मुख व्यक्ति प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से अपने स्वभाव को बदल लेता है, अपने व्यक्तित्व का रूपांतरण कर लेता है। स्वभाव-परिवर्तन या व्यक्तित्व-परिवर्तन की घटनाएँ शिविर-साधकों के जीवन में घटित हो जाती हैं। वहाँ साधना कर कई व्यक्ति-व्यसन-मुक्त हो जाते हैं। शराब और धूम्रपान जैसी बुराइयों को व्यक्ति फैशन के रूप में मान्यता दे देता है। फिर वह इनके चंगुल में इतना फँस जाता है कि चाहने पर भी मुक्त नहीं हो सकता। प्रेक्षाध्यान के शिविर लेने वाले व्यक्ति अंतःकरण की प्रेरणा और वातावरण के प्रभाव से असंभव को संभव बनाकर दिखा देते हैं। वे तनाव का विसर्जन करने में सफल हो जाते हैं और शांतिपूर्ण जीवन जीने की तकनीक प्राप्त कर लेते हैं। जब तक ध्यान के द्वारा अंतर्मुखता की स्थिति पुष्ट नहीं होती है, स्वभाव-परिवर्तन की कल्पना साकार नहीं हो सकती। इस दृष्टि से ध्यान शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त कर उसका प्रयोग करने की अपेक्षा सदा बनी रहती है।

प्रश्न : प्रेक्षाध्यान का मूलभूत उद्देश्य क्या है? इसकी साधना करने वाला किस दिशा में, किस सीमा तक गति कर सकता है।

उत्तर : प्रेक्षाध्यान का मुख्य उद्देश्य है—जीवन में धर्म का प्रयोग। आज धर्म शक्ति-शून्य-सा प्रतीत हो रहा है, उसका कारण यही है कि धार्मिक लोगों के जीवन में धर्म का कोई प्रायोगिक रूप नहीं रहा। प्रयोग के बिना धर्म जीवन को भावित नहीं कर सकता। धर्म को प्रयोग की भूमिका पर उतारने के लिए ध्यान का अभ्यास जरूरी है। ‘इसिभासियं’ में कहा गया है कि ध्यान-शून्य धर्म बिना सिर का शरीर है। ध्यान धर्म का प्रायोगिक रूप है। ध्यान के अभ्यास से धर्म जीवन में उतरता है। जब तक ध्यान की गहराई में प्रवेश नहीं होता, धर्म के रहस्य खुल नहीं सकते। धर्म अपने आपमें एक रहस्य है। वह तब तक अधिगत नहीं हो सकता, जब तक ऊपर-ऊपर से धर्म का स्पर्श किया जाए।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(२३)

अगम तुम देवों से अमिताभ!
बताओ हो कैसे पहचान
आंज दो आँखों में आलोक
रहूँगी फिर न कभी अनजान।।

देख प्राणों की गहरी प्यास
स्नेह का दरिया देते खोल
सत्य की जिज्ञासा हो काश!
मौन भी सब कुछ जाता बोल
तिमिर में डूबा जब नरलोक
उगाया तुमने स्वर्ण विहान।।

हुआ विपदाओं से जग भीत
उठा मन में करुणा का ज्वार
सिखाने जीवन का संगीत
सुनाई अणुव्रत की झंकार
गया वह सात समंदर पार
चलाया तुमने जो अभियान।।

भुजाओं पर पौरुष का मंत्र
सुपावन चरण-युगल गतिमान
सघन संकल्पशक्ति का तंत्र
शब्द भी बन जाता आह्वान
फले हर सपना अपने-आप
आज दो ऐसा कुछ वरदान।।

(२४)

जिस मौसम ने सिरजा तुमको उसको नमन हमारा है।
सृजन चेतना से तुमने सबका व्यक्तित्व निखारा है।।

फूलों की घाटी में देखी वह मुस्कान तुम्हारी है
सदा समर्पित करता युग अपनी हर साध कुंवारी है
सोते और जागते हर पल हमने तुम्हें निहारा है।।

मांझी का जीवन निर्भर है डॉंड और पतवारों पर
उपवन की शोभा निर्भर बासंती विमल बहारों पर
मानवता के आलम्बन तुम तुमने उसे उबारा है।।

गीतों की हर थिरकन में तुम स्वयं गीत बन गाते हो
बंजर भू उर्वर होती जब करुणा रस बरसाते हो
युग नयनों के दर्पण में जो वह प्रतिबिम्ब तुम्हारा है।।

परस तुम्हारा जब हो जाता दीपक जलता बिन बाती
तुम्हें देखकर मन-सागर की सोई लहरें इतराती
वह अनुपम व्यक्तित्व तुम्हारा सचमुच अजब नजारा है।।

चरण तुम्हारे टिके जहाँ पर पतझर भी ऋतुराज बने
तुम्हें देखकर जनम रहे हैं आँखों में नूतन सपने
पल-पल गीत तुम्हारे गाता साँसों का इकतारा है।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

आज्ञावाट

भगवान् प्राह

(७) आराधको जिनाज्ञायाः, संसारं तरति ध्रुवम्।
तस्या विराधको भूत्वा, भवाम्भोधौ निमज्जति।।

वीतराग की आज्ञा की आराधना करने वाला निश्चित रूप से भव-सागर को तर जाता है और उसकी विराधना करने वाला भव-सागर में डूब जाता है।

(८) आज्ञायां यश्च श्रद्धालुः मेधावी स इहोच्यते।
असंयमो जिनाज्ञा, जिनाज्ञा संयमो ध्रुवम्।।

जो आज्ञा के प्रति श्रद्धावान् है, वह मेधावी है। असंयम की प्रवृत्ति में वीतराग की आज्ञा नहीं है। जहाँ संयम है वहीं वीतराग की आज्ञा है।

(९) संयमे जीवनं श्रेयः, संयमे मृत्युरुत्तमः।
जीवनं मरणं मुक्त्यै, नैव स्यातामसंयमे।।

संयममय जीवन और संयममय मृत्यु श्रेय है। असंयममय जीवन और असंयममय मरण मुक्ति के हेतु नहीं बनते।

संसारी प्राणी की दो अवस्थाएँ हैं—जीवन और मरण। ये दोनों अपने आपमें अच्छे या बुरे नहीं होते। जब ये दोनों संयम से अनुप्राणित होते हैं तब श्रेयस्कर बनते हैं और जब असंयम से ओत-प्रोत होते हैं तब ये अश्रेयस्कर हो जाते हैं। संयमी व्यक्ति का जीना भी अच्छा है और मरना भी। असंयमी व्यक्ति का न जीना अच्छा है और न मरना। संयमी व्यक्ति यहाँ जीता हुआ सक्रियता में प्रवृत्त रहता है, शांति और आनंद का अनुभव करता है और जब वह मरता है तो उसकी अच्छी गति होती है। असंयमी व्यक्ति का जीवन न यहाँ अच्छा होता है और न उसका परलोक ही सुधरता है। जिसका वर्तमान पवित्र नहीं है, उसका भविष्य पवित्र नहीं हो सकता। जिसका वर्तमान पवित्र है, उसका भविष्य निश्चित रूप से सुंदर होगा।

जैन दर्शन में कामनाओं का निषेध किया गया है। किंतु मुमुक्षु के लिए संयममय जीवन और संयममय मृत्यु की कामना का विधान मिलता है। श्रावक के तीन मनोरथों में एक यह भी है—कब मैं समाधिपूर्ण मरण को प्राप्त करूँगा। जीवन की यह अंतिम परिणति यदि समाधिमय होती है तो उसका फल श्रेयस्कर होता है।

एक बार भगवान् महावीर समवसरण में बैठे थे। वहाँ राजा श्रेणिक, अमात्य अभयकुमार और कसाई कालसौकरिक भी उपस्थित थे। एक ब्राह्मण वहाँ आया। उसने भगवान् महावीर से कहा—मरो। राजा श्रेणिक से कहा—मत मरो। अमात्य अभयकुमार से कहा—भले मरो, भले जीओ। कालसौकरिक से कहा—मत मरो, मत जीओ।

ब्राह्मण यह कहकर चला गया। राजा श्रेणिक का मन इन वाक्यों से आंदोलित हो उठा। उसने भगवान् से पूछा। भगवान् ने कहा—राजन्! वह ब्राह्मण के वेश में देव था। उसने जो कहा वह सत्य है। उसने मुझे कहा—मर जाओ। इसका तात्पर्य है कि मरते ही मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। उसने तुझे कहा—मत मरो। यह इसलिए कि तुझे मरने के बाद नरक मिलेगा। अमात्य से कहा—भले मरो, भले जीओ। क्योंकि वह मरने पर स्वर्ग प्राप्त करेगा जहाँ सुख ही सुख है और यहाँ भी उसे सुख ही है। कालसौकरिक से कहा—मत मरो, मत जीओ। क्योंकि उसका वर्तमान जीवन भी पापमय प्रवृत्तियों से आक्रांत है और मरने पर भी उसे नरक ही मिलेगा।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' □

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-२६: सम्यक्त्व के कितने भूषण हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व के पाँच भूषण हैं—

- | | | |
|----------------|---|----------------------------------|
| (१) स्थैर्य | — | धर्म में स्थिर होना |
| (२) प्रभावना | — | धर्म की महिमा फैलाना |
| (३) भक्ति | — | देव, गुरु और धर्म का बहुमान करना |
| (४) कौशल | — | धर्म की अवगति करना |
| (५) तीर्थ सेवा | — | चार तीर्थ की यथोचित सेवा करना |

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य पादलिप्त



आचार्य पादलिप्त चामत्कारिक विद्याओं के स्वामी थे। पैरों पर औषधियों का लेप लगाकर गगन में यथेच्छ विहरण की उनमें असाधारण क्षमता थी। वे सरस काव्यकार और शातवाहन-वंशी राजा हाल की सभा के अलंकार थे।

पादलिप्त के पिता फुल्लचंद्र कौशला नगरी के विपुल श्रीसंपन्न श्रेष्ठी थे। उनकी पत्नी प्रतिमा रूपवती एवं गुणवती महिला थी। उनकी वाक्-माधुरी के सामने सुधा घूँट भी नीरस प्रतीत होती। विविध गुणों से संपन्न होने पर भी निःसंतान होने के कारण प्रतिमा चिंतित रहती। अनेकविध औषधियों का सेवन तथा नाना प्रकार के जंत्र-तंत्र आदि भी उसकी चिंता को मिटा न सके। एक बार उसने संतान प्राप्ति हेतु वैरोट्या देवी की आराधना में अष्ट दिन का तप किया। तप के प्रभाव से देवी प्रकट हुई और कहा—'ज्ञान-सागर, बुद्धि-उजागर, लब्धि-संपन्न आचार्य नागहस्ती के पाद प्रक्षालित उदक का पान करो, उससे तुम्हें पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी।'

देवी के मार्गदर्शन से प्रतिमा प्रसन्न हुई। वह भक्ति-भरित हृदय से उपाश्रय में पहुँची। आचार्य नागहस्ती के पद से प्रक्षालित उदक की उपलब्धि उसे अपने सम्मुख आते एक मुनि के द्वारा हुई।

चरणोदक पान करने के बाद प्रतिमा ने नागहस्ती के निकट जाकर दर्शन किए। नागहस्ती ने प्रतिमा से कहा—'तुमने मेरे से दस हाथ दूर चरणोदक पान किया है अतः तुम्हें दस पुत्रों की प्राप्ति होगी। उनमें तुम्हारा प्रथम पुत्र तुम्हारे से दस योजन दूर जाकर महान् विकास को प्राप्त होगा। धर्मसंघ की गौरव-वृद्धि करेगा एवं बृहस्पति के समान वह बुद्धिमान् होगा। तुम्हारी अन्य संतानें भी यशस्वी होंगी।'

चंपक, कुसुम आदि नाना सुमनों के मकरंद पान से उन्मुक्त मधुपों की ध्वनि के समान गिरा से संभाषण करती हुई प्रतिमा विनम्र होकर बोली—'गुरुदेव, मैं अपनी प्रथम संतान को आपके चरणों में समर्पित करूँगी।' कृतज्ञता ज्ञापन कर महान् आशा के साथ वह अपने घर लौटी। श्रेष्ठी फुल्लचंद्र भी पत्नी प्रतिमा से समग्र वृत्तांत सुन प्रसन्न हुए और गुरुचरणों में प्रथम संतान को समर्पित कर देने की बात को भी उन्होंने पर्याप्त समर्थन दिया।

काल-मर्यादा संपन्न होने पर प्रतिमा ने कामदेव से भी अधिक रूपसंपन्न, सूर्य से भी अधिक तेजस्वी पुत्र-रत्न को जन्म दिया। पुत्र के गर्भकाल में प्रतिमा ने नाग का स्वप्न देखा था। स्वप्न के आधार पर पुत्र का नाम नागेंद्र रखा गया। माता की ममता और पिता के वात्सल्य से परम पुष्टता को प्राप्त बालक दिन-प्रतिदिन विकास को प्राप्त होता रहा एवं परिजनों के स्नेहसिक्त वातावरण में वह बढ़ता गया।

पुत्र-जन्म से पूर्व ही वचनबद्ध होने के कारण प्रतिमा ने अपने पुत्र को नागहस्ती के चरणों में समर्पित कर दिया। अल्पवय शिशु को नागहस्ती ने प्रतिपालना करने के लिए जननी प्रतिमा के पास ही रखा। आठ वर्ष की अवस्था में बालक को आर्य नागहस्ती ने अपने संरक्षण में लिया। मुनि संग्रामसिंह नागहस्ती के गुरुबंधु थे। आर्य नागहस्ती के आदेश से शुभ मुहूर्त में संग्रामसिंहसूरि ने नागेंद्र को मुनि दीक्षा प्रदान की। मंडल मुनि की सन्निधि में बाल मुनि का अध्ययन प्रारंभ हुआ। मुनि नागेंद्र की बुद्धि शीघ्रग्राही थी। एक ही वर्ष में उन्होंने व्याकरण, न्याय, दर्शन, प्रमाण आदि विविध विषयों का गंभीर ज्ञान सफलतापूर्वक अर्जन किया।

एक दिन नागेंद्र जल लाने के लिए गए। गोचरी से निवृत्त होकर वे उपाश्रय में लौटे और ईर्या-पथिकी आलोचना करने के बाद गुरु के समक्ष उन्होंने एक श्लोक बोला—

अंबं तं बच्छीए अपुप्फियं पुप्फदंतपंतीए।

नवसालिकंजियं नवबहूइ कुडएण मे दिन्नां।।

ताम्र की भाँति ईषत् रक्ताभ, पुष्पोपम दंतपंक्ति की धारिणी नववधू ने मृण्मय पात्र से यह कांजी जल प्रदान किया।

शिष्य के मुख से शृंगारमयी भाषा में काव्य को सुनकर गुरु कुपित हुए। रोषारुण स्वरो में वे बोले—'पलित्तोऽसि' यह शब्द प्राकृत भाषा का रूप है एवं रागाग्नि-प्रदीप्त भावों का द्योतक है।

(क्रमशः)



विकास महोत्सव

गांधीनगर।

तेरापंथ भवन में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में विकास के महायात्री गुरुदेव तुलसी का जीवन-दर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि मेरे भाग्य विधाता, नव जन्मदाता, संयम रत्नदाता हैं-तुलसी गणी। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शिताप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी तथा महिला मंडल ने भी गीत का संगान किया।

महासभा सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा, सभा उपाध्यक्ष अभयराज कोठारी, सहमंत्री राजेंद्र बैद, महिला मंडल अध्यक्ष स्वर्णमाला पोखरना, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, मंत्री माणक संचेती व जय कोठारी ने भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दर्शिताप्रभा जी ने किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष सुरेश दक व कोषाध्यक्ष बाबूलाल बाफना के साथ अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

विरल विशेषताओं के विशिष्ट संवाहक थे - आचार्य तुलसी

चेन्नई, साहुकारपेट।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का पट्टोत्सव विकास महोत्सव के रूप में मनाया गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि विरल विशेषताओं के विशिष्ट संवाहक थे आचार्य तुलसी।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि पूरे देश को नैतिकता की रोशनी प्रदान करने वाले महासूर्य का नाम है - आचार्य तुलसी। इंसान को इंसानियत का अहसास कराने के लिए अणुव्रत का दीप प्रज्वलित किया।

साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी एक सफल गुरु थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ में विकास के दुर्लभ दस्तावेज लिखे।

विकास महोत्सव के विविध आयोजन

साध्वी समत्वयशा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को अनगिन अवदान दिए। विकास के नए-नए द्वार उद्घाटित किए। उनका संपूर्ण जीवन विकास की वर्णमाला से गुंफित है।

सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने कहा कि आचार्य तुलसी महान युगद्रष्टा थे। उन्होंने युग की नब्ज को पहचाना एवं धर्मसंघ में युगीन विकास के नए मानक तैयार किए। सभा मंत्री गजेंद्र खाटेड़, तेयुप अध्यक्ष मुकेश नवलखा, महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खाटेड़, महासभा उपाध्यक्ष ज्ञानचंद आंचलिया ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

कुशल नेतृत्व संपन्न थे आचार्यश्री तुलसी

राजारजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी के विकास महोत्सव के आयोजन का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। सभाध्यक्ष मनोज डागा ने सभी का हार्दिक स्वागत किया। तथा धर्मक्रांति के पुरोधा तुलसीगणी के प्रति श्रद्धासिक्त भाव प्रकट किए।

साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि कुशल नेतृत्व संपन्न आचार्य धर्मसंघ में बहुआयामी विकास की दिशाएँ उद्घाटित करते हैं।

तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेमम अध्यक्ष लता बाफना, समण संस्कृति संकाय से कंचन छाजेड़, विकास दुगड़, चुन्नीलाल घोषल, संघ-संवाद से जितेंद्र घोषल आदि ने भी भाव प्रकट किए। सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं राजारजेश्वरी नगर के उपासक भाई-बहनों ने अभिवंदना में संगीत द्वारा प्रस्तुति दी। संचालन सरोज आर बैद ने किया। सीमा जैन ने आभार

व्यक्त किया।

विकास के पर्याय थे आचार्यश्री तुलसी

गुवाहाटी।

तेरापंथी सभा के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। सभा अध्यक्ष झनकार दुधोड़िया ने कहा-आचार्य तुलसी विकास के पर्याय थे। आचार्यश्री तुलसी ने जीवन-भर अपनी जन्मजात प्रतिभा के पौरुष से संयोजित कर संघ को विकास के शिखरों पर आरूढ़ किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। सभा के मंत्री निर्मल सामसुखा ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

इस अवसर पर सभा के कार्यकारिणी सदस्य रिमेश खटेड़, तेमम की मंत्री सुशील मालू, तेयुप के उपाध्यक्ष सुनील जम्मड़, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष बजरंग बैद, टीपीएफ के अध्यक्ष रामचंद्र संचेती व मंत्री प्रवीण छाजेड़ आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। उपासिका बहनों ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन सभा के उपाध्यक्ष दिलीप दुगड़ ने किया। इस अवसर पर संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य पर उपवास करने वाले ७ साल तक के बच्चों को कमलेश-रेणु देवी सुराणा के सोजन्म से पुरस्कृत किया गया।

अनेक विशेषताओं के धनी - आचार्यश्री तुलसी

गंगाशहर।

आचार्यश्री तुलसी एक विलक्षण आचार्य, एक विलक्षण संत व योगी थे। वे

अनेक विलक्षण विशेषताओं के धनी थे। उनका आभामंडल, तेज व ओजस्वी वाणी विकास का मार्ग प्रशस्त करती थी। गुरुदेव तुलसी के अवदान केवल तेरापंथ धर्मसंघ या जैन धर्म के लिए ही नहीं, वरन पूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी है। यह उद्गार सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी पावनप्रभा जी ने विकास महोत्सव के अवसर पर व्यक्त किए।

साध्वी दीपमाला जी ने गुरुदेव तुलसी के अवदानों के बारे में कहा कि उन्होंने नारी शिक्षा, अणुव्रत, समण श्रेणी, आगम संपादन, साहित्य सृजन आदि अनेक अवदान दिए। उनके द्वारा आचार्य पद का विसर्जन इतिहास की एक विरल घटना है। साध्वियों द्वारा सामुहिक गीतिका प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति के मनोज छाजेड़ द्वारा मंगलाचरण से किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, महिला मंडल अध्यक्ष ममता रांका, तेयुप के सहमंत्री भरत गोलछा, किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़, कन्या मंडल संयोजिका योगिता भूरा व सह-संयोजिका लेखा मालू ने इस अवसर पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री रतनलाल छलाणी ने किया।

क्रांति के पुरोधा पुरुष आचार्य तुलसी

खेड़ब्रह्मा।

आचार्यश्री तुलसी का पट्टोत्सव विकास महोत्सव, शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आज जो हम तेरापंथ धर्मसंघ का स्वरूप देख रहे हैं, उसका महत्त्वपूर्ण श्रेय जाता है आचार्यश्री तुलसी को। साध्वीश्री जी ने कहा कि वे युगप्रधान थे, युगद्रष्टा थे, युग की नब्ज

को उन्होंने पकड़ा। इस अवसर पर साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी श्रुतप्रभा जी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने वक्तव्य और अनुभवों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला द्वारा शब्दचित्र द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। कमलेश मेहता, अभिनंदन छाजेड़, अंकिता मेहता, सिद्धि, खुशी, बसंतिलाल मेहता द्वारा गीतिका, वक्तव्यों द्वारा अपने आराध्य के प्रति भावना प्रकट की गई। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला के मंगलाचरण द्वारा हुआ। नीलेश कोठारी द्वारा कार्यक्रम का संयोजन किया गया।

विकास के पुरोधा - गुरुदेव श्री तुलसी

विशाखापट्टनम।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की बहनों की मधुर स्वर लहरी के साथ हुआ। सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष सिद्धकरण आंचलिया ने आचार्य तुलसी को विकास पुरुष बताते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

महासभा के आंचलिक प्रभारी विमल कुंडलिया ने तेरापंथ के विकास की कहानी को अपने शब्दों का बाना पहनाया। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका ने सभा को भाव-विभोर कर दिया।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक विकासशील धर्मसंघ है। धर्मसंघ के विकास में हमारे पूर्वाचार्यों का तो बहुत योगदान रहा ही है, साथ ही साथ विकास के पुरोधा आचार्यश्री तुलसी ने विकास के नए-नए आयाम उद्घाटित किए। उन्होंने समाज को नई दिशा बोध दिया तो धर्मसंघ को विकास के नए आयाम दिए। देश के नैतिक उत्थान के लिए अणुव्रत का शंखनाद किया तो तनाव व टेंशन भरे शोरगुल में प्रेक्षाध्यान रूपी संजीवनी हमें दी। इसी प्रकार साध्वीश्री जी ने अनेक रोचक प्रसंगों के माध्यम से सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम का संयोजन विमल कुंडलिया ने किया।

विकास महोत्सव पर मासखमण तप अभिनंदन

डी०वी० कॉलोनी।

तेरापंथ भवन में विकास महोत्सव-तप अभिनंदन कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र से किया गया। इस अवसर पर भवन में १६ साध्वियों और ३ समणीवृंद उपस्थित थे। सर्वप्रथम महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीड़िया ने तपस्वियों की तप की अनुमोदना की। तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा द्वारा तप अनुमोदना और महोत्सव की शुभकामनाएँ दी गईं। हिंदी मिलाप की सह-संपादक सरिता बैद ने सभी साध्वियों के प्रति आभार व्यक्त किया। तपस्वी भाई महालचंद बोथरा के परिवार की तरफ से बहनों ने गीतिका गाकर अपने भाव व्यक्त किए। टीपीएफ अध्यक्ष मोहित बैद ने अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका अंजू बैद ने शुभकामनाएँ व्यक्त की और ज्ञानशाला परिवार की ओर से अपने भाव व्यक्त किए। तपस्वी महालचंद की पुत्रवधु एवं पौत्री द्वारा एक सुंदर प्रस्तुति दी गई। तेरापंथी सभा,

सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने सभी तपस्वियों को शुभकामनाएँ दी।

शासनश्री साध्वी जिनेखा जी द्वारा सभी तपस्वियों के तप की अनुमोदना की एवं गीत की प्रस्तुति दी। समणी स्थितप्रज्ञा जी द्वारा विकास महोत्सव पर वक्तव्य दिया। डॉ० साध्वी योगक्षेमप्रभा जी द्वारा आध्यात्मिक उल्लास की मंगलकामना व्यक्त की गई।

साध्वी काव्यलता जी द्वारा उद्गार व्यक्त किए। बोलाराम से पधारी साध्वीवृंद द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के सहमंत्री धर्मेन्द्र चोरड़िया ने असाधारण साध्वीप्रमुखश्री कनकप्रभा जी के संदेश का वाचन किया।

साध्वी मधुस्मिता जी ने आचार्यश्री तुलसी के द्वारा संघ में विकास की यात्रा पर प्रकाश डाला। जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी व महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

तेरापंथ सभा, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति एवं महिला मंडल के अध्यक्ष व पदाधिकारियों द्वारा तपस्वी भाई-बहनों का सम्मान, अभिनंदन साहित्य द्वारा किया

गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी और साध्वी मार्दवयशा जी ने किया। लक्ष्मीपत बैद द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

ब्लड ऑन व्हील्स

विजयनगर।

अभातेयुप निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव के अंतर्गत तेयुप द्वारा ब्लड डोनेशन ऑन व्हील का आयोजन सुमनहल्ली लेगेरी मेन रोड में किया गया। जेसीआई कोस्मो के संयुक्त सहयोग से यह शिविर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में परिषद अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि तेयुप द्वारा इस वर्ष ३१ रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। वैक्सीनेशन के कारण रक्त की किल्लत को पूरा करने हेतु तेयुप, विजयनगर ने इस शिविर का आयोजन किया। यह रक्तदान सभी रक्तदाताओं एवं तेयुप एवं जेसीआई कोस्मो की पूरी टीम के सहयोग से हुआ। इस अवसर पर तेयुप के विशाल दक एवं जेसीआई कोस्मो के अध्यक्ष मदन मुणोत, जितेश भंडारी एवं पीयूष गिलुंडिया आदि सदस्य उपस्थित रहे।

तेयुप मंत्री विकास बांठिया ने जेसीआई कोस्मो टीम को धन्यवाद प्रेषित किया एवं रक्तदान संयोजक करण मांडोत एवं राहुल सेठिया के विशेष श्रम के लिए उन्हें साधुवाद दिया।

आचार्य भिक्षु चरमोत्सव

विल्लुपुरम।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु आलोक पुंज, तेजपुंज पुरुष थे। उन्होंने जीवन-भर अध्यात्म का आलोक बाँटा। साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु के जीवन का हर पहलू अध्यात्म से सराबोर था। इसी अध्यात्म बल के सहारे, विरोधी परिस्थितियों में भी भिक्षु स्वामी अटल रहे। साध्वी प्रबोधयशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने अपने साधना के बल पर शिथिलाचारों को खुले मैदान में चुनौती दी एवं कष्टों को आभार मानकर, उन्हें स्वीकार किया।

तेरापंथ सभा मंत्री राजेश सुराणा एवं कन्या मंडल से आशिका बुरड़ ने आचार्य भिक्षु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। विल्लुपुरम एवं वलवनूर महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने एकासन, उपवास, बेले का प्रत्याख्यान किया। संतोष सुराणा ने 98 उपवास का प्रत्याख्यान किया। मंगलाचरण कन्या मंडल ने एवं कार्यक्रम का संचालन स्नेहा भंडारी ने किया।

भिक्षु चरमोत्सव एवं तप अभिनंदन

हैदराबाद।

9वीं सदी के महान संत आचार्य भिक्षु विचार क्रांति एवं आचार क्रांति के पुरोधा थे। उन्होंने शिथिलाचार के विरुद्ध बगावत की। सत्य को प्रतिष्ठित करने के लिए वे ताउम्र संघर्ष करते रहे। ये उद्गार आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष्य में साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहे।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि मारवाड़ की शुष्क धरा में जन्म लेने वाले आचार्य भिक्षु महान दार्शनिक थे। इस अवसर पर साध्वी योगक्षेमप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी, साध्वी मधुरप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान कर माहौल को भक्तिमय बना दिया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती ने अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद, तेरापंथ आगापुरा के कार्यकर्ताओं, तेरापंथ आगापुरा की बहनों द्वारा समुच्चारित गीतों ने सबको भक्ति से ओत-प्रोत बना दिया। आगापुरा क्षेत्र के कार्यकर्ता प्रमोद भंडारी ने अपने भाव व्यक्त किए।

कमल वैद के परिवार की ओर से धृति नाहटा ने अपने बाल सुलभ भावों की प्रस्तुति दी तथा सीमा, कविता, ज्योति एवं प्रभा के द्वारा गीत का संगान किया गया। मंच संचालन साध्वी कुंदनयशा जी ने किया।

भिक्षु चरमोत्सव के विविध आयोजन

संविधान के मंत्रदाता आचार्य भिक्षु

बोइनपल्ली।

साध्वी मधुस्मिता जी व साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का २१६वाँ चरमोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण ममता दुगड़ के सुमधुर मंगल गीत से हुआ। साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने ज्योतिर्मय जीवन जीया और ज्योतिर्मय मरण प्राप्त किया। एक गुरु, एक आचार और एक संविधान के मंत्रदाता आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ का सृजन कर जैन जगत में एक नए क्षितिज का उद्घाटन किया।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म कंटालिया की पुण्य धरा पर हुआ। अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि, दृढ़-संकल्प शक्ति प्रबल पुरुषार्थ से जन-जन को नया आलोक प्रदान किया।

आस्था एवं श्रद्धामय भावों की प्रस्तुति देते हुए साध्वी सहजयशा जी ने साध्वीवृंद के साथ सुमधुर गीत का संगान कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतिषशा जी ने किया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद द्वारा नियुक्त बोइनपल्ली चातुर्मास को संयोजक सतीश दुगड़, तेयुप हैदराबाद के मंत्री वीरेंद्र घोषल व नवनीत छाजेड़ ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में अभातेयुप द्वारा निर्देशित व तेयुप, हैदराबाद द्वारा संचालित जप अनुष्ठान का समायोजन हुआ। जिसमें सैकड़ों भाई-बहनों ने ॐ भिक्षु-जय भिक्षु का जप कर आराध्य को श्रद्धा सुमन समर्पित किए। कार्यक्रम की सफलता में अनिल दुगड़ व राकेश धारीवाल का पुरुषार्थ सराहनीय रहा।

आचार्य भिक्षु एक महातपस्वी संत थे

बीकानेर।

आचार्य भिक्षु का २१६वाँ चरमोत्सव सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक महातपस्वी संत थे। वे ऐसे महामानव थे, जिनके पदचिह्नों पर आज लाखों लोग चल रहे हैं। साध्वी रम्यप्रभा जी ने कविता के माध्यम से अपनी भावनाएँ प्रस्तुत कीं। जैन महासभा अध्यक्ष जैन लुणकरण छाजेड़ ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना उच्च मनोबल व संकल्प शक्ति के योग से ही संभव हुई। उन्होंने कहा कि राजनगर के आगम के जानकार श्रावक नहीं होते तो तेरापंथ का जन्म नहीं होता। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद्र

सोनी, महिला मंडल अध्यक्षा ममता रांका, तेयुप के अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, मुदित ललवानी, सुंदरलाल छाजेड़, करनीदान रांका, राजेंद्र सेठिया, गरिमा सेठिया, चैनरूप छाजेड़, धर्मेन्द्र डाकलिया ने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

दूरदर्शी आचार्य आचार्य भिक्षु

नोहर।

स्थानीय तेरापंथ भवन के प्रांगण में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य भिक्षु का २१६वाँ निर्वाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ रमणीय मुनि के मंगलाचरण से हुआ। शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि महाभाग आचार्य भिक्षु का नाम सुधारवादी आचार्यों की श्रेणी में पहले स्थान पर लिखा जा सकता है। उन्होंने विक्रम संवत् १८०८ में २५ वर्ष की आयु में स्थानकवासी संप्रदाय के प्रतिष्ठित आचार्य रघुनाथ जी के पास दीक्षा ली। आगम ग्रंथों का अध्ययन किया। उनकी त्याग-तपस्या का ही परिणाम है कि तेरापंथ की ज्योत २६२ वर्ष के बाद भी जल रही है। उन्होंने जो लकीरें खींची वे अमिट बन गईं, आज भी धर्मसंघ उन लकीरों पर चल रहा है। वे दूरदर्शी आचार्य थे। समय को देखते हुए आने वाले आचार्य अगर कुछ परिवर्तन करना चाहे तो उसके लिए उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता दी।

शासनश्री जी ने आचार्य भिक्षु की अभ्यर्थना में गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मंच संचालन सुशील सिपानी ने किया। अन्य वक्ताओं में महिला मंडल अध्यक्ष किरण देवी छाजेड़, महेंद्र सिपानी, सरला देवी सिपानी, सज्जन देवी छाजेड़, तारा देवी बाँटिया, पुष्पा देवी सिपानी, विनोद बरड़िया,

चंद्रेश सिपानी, महिला मंडल आदि ने गीत, भाषण द्वारा महामना भिक्षु को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

तप आराधना चरमोत्सव दिवस

मैसूर।

आचार्य भिक्षु के चरमोत्सव पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने तपस्वी का जीवन जीया। संघ को तेजस्वी बनाया। वे प्रकाश स्तंभ बनकर मानव मात्र को प्रकाश बाँटते रहे। साधना के विहङ्ग मार्ग पर निरंतर गतिशील रहे। उनकी प्रज्ञा जागृत थी, वे विलक्षण प्रतिभा संपन्न आचार्य थे। आचार्य भिक्षु का आचार-विचार और व्यवहार जन-जन को आकृष्ट करने वाला था। वे अध्यात्म के प्रवर पुरुष और आग्रह मुक्त व्यक्तित्व के धनी थे।

इस अवसर पर पवन मुणोत एवं उपासक राजेश आच्छा ने गीत एवं विचार व्यक्त किए। हुनसुर से समागत निशा बोहरा ने 9५ दिन की तपस्या का सम्मान तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं तेयुप द्वारा किया गया। चंचल बोहरा एवं संगीता बोहरा ने भावना प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा मंत्री अशोक दक ने स्वागत किया। साध्वीवृंद ने तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। साध्वी सिद्धियशा जी ने आचार्य भिक्षु के प्रति कविता प्रस्तुत की। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने भाव व्यक्त किए। संचालन साध्वी राजुलप्रभा जी ने किया।

भिक्षु चरमोत्सव

फारबिसगंज।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में २१६वाँ चरमोत्सव कार्यक्रम तीन चरणों में मनाया गया। कार्यक्रम के पहले चरण में डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी

ने तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु के प्रेरणादायी जीवन, उनके सिद्धांत एवं उनके दर्शन पर प्रकाश डाला। साध्वी भावना कुमारी जी ने उस युग और इस युग की परिकल्पना करते हुए कविता प्रस्तुत की। साध्वी सुधा कुमारी जी ने गीत प्रस्तुत किया। महासभा से नेपाल प्रभारी अनूप बोधरा ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का दूसरा चरण तपअभिनंदन का कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का तीसरा चरण तेयुप, फारबिसगंज के द्वारा आयोजित 'एक शाम भिक्षु के नाम' रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ शनिवारीय सामायिक में तेरापंथ प्रबोध से हुआ। साध्वी पीयूषप्रभा जी ने स्वरचित गीत गाकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की। तेयुप के अध्यक्ष आलोक सेठिया ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी सुधा कुमारी जी ने गीत से भवन को गुंजाया वहीं साध्वी दीप्तिषशा जी ने स्वरचित गीत से भिक्षु स्वामी के जयकारे लगाए। आकर्षण का केंद्र विराटनगर से समागत सुमधुर गायिका मोना नीलखा रही।

फारबिसगंज से विभिन्न गायक सरिता सेठिया, नीलम बोधरा, निर्मल सेठिया, दीपक समदरिया, ललित सुमित डागा, हेमंत गोलछा, आशीष वैद, भाग्यश्री डागा, कन्या मंडल, कल्पना सेठिया आदि ने प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों में भाविका सेठिया, आस्था बोधरा, वंशिका सेठिया, अंशु और मयंक बोधरा ने भी दर्शकों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तिषशा जी ने एवं तेमम की मंत्री समता दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष रजनीश बेगवानी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभा के मंत्री सुमन डागा और कोषाध्यक्ष मुकेश राखेचा का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष निर्मल मरोठी, महिला मंडल की अध्यक्षा कुसुम भंसाली और अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रभा सेठिया की विशेष उपस्थिति रही।

दीक्षार्थी बहन का अभिनंदन

गदग।

तेरापंथ भवन में साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी बहन शिवानी का अभिनंदन समारोह मनाया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि दीक्षा व सुवास है जो भीतर और सबको सुवासित करता है। दीक्षा वह दिव्य प्रभात है जो जन्म-जन्म के अंधकार को आलोक से आपूरित कर देता है। दीक्षा वह प्रकाश जिससे सबको रोशनी मिलती है। यह सत्यम शिवम सुंदरम की पगडंडी है। डॉ० साध्वी गवेषणा जी ने कहा कि शिवानी संयम के पथ पर बढ़ रही है तो तुम्हें मुख्य रूप से डेडीकेशन को अपनाना है, क्योंकि समर्पण वह लकड़ी है जो डूबती नहीं है और

अहंकार वह पत्थर है जो कभी तैरता नहीं है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि दीक्षा सात्त्विक जीवन जीने की कला है। अंधकार से प्रकाश की प्राप्ति है। आत्मा से परमात्मा की प्राप्ति है। शव से शिव बनने की प्रक्रिया है। साध्वी मेरुप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। कर्नाटक राज्य अंगूर निगम के अध्यक्ष कांतिलाल भंसाली, तेयुप के अध्यक्ष दिनेश संकलेचा, तेमम की मंत्री विजेता भंसाली, स्थानकवासी समाज के कार्यकर्ता गौतम पालरेचा, महिला मंडल की सदस्य इंदिरा बाघमार, महाराष्ट्र से स्वागत अरुण भाई पाटिल, दिलीप गेलड़ा ने अपने विचार रखे। तेयुप के मंत्री कमलेश

जीरावला ने आभार ज्ञापन किया। तेमम की बहनों ने गीतिका के साथ अभिव्यक्ति दी। राज्य कार्यकारिणी महिला मोर्चा की मेंबर शारदा हीरेमठ कांतिलाल भंसाली सभा के मंत्री गौतम चोपड़ा, प्यारेलाल बोहरा, नेमीचंद भंसाली ने दीक्षार्थी बहन का सम्मान किया। स्थानक समाज की ओर से ममता पालरेचा, इंदिरा बाघमार, किशन बाघमार ने सम्मान किया।

◆ व्यक्ति अपने गुणों के कारण साधु कहलाता है और अवगुणों के कारण असाधु कहलाता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



आशंसा रहित साधना करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ७ अक्टूबर, २०२१

आध्यात्मिक शक्ति के स्रोत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज आश्विन नवरात्रा के प्रथम दिन आवाहिनक अनुष्ठान के अंतर्गत अनुष्ठान करवाया। अमृत प्रेरणा प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि ठाणं आगम में आशंसा प्रयोग के दस प्रकार बताए हैं। प्राणी में अनेक प्रकार की इच्छाएँ उभर सकती हैं। यहाँ आशंसाओं का, इच्छाओं का निरूपण किया गया है।

पहला आशंसा का प्रयोग है—इच्छा करना, ईहलोक की आशंसा करना। हम मनुष्य हैं, मनुष्य जन्म के संदर्भ में इच्छा करना। कोई राजा, चक्रवर्ती, महान आदमी बन जाऊँ। दूसरा प्रकार है—परलोक की आशंसा करना। जैसे देव गति संबंधी। मैं इंद्र या सामानिक देव बन जाऊँ।

तीसरा प्रकार है—ईहलोक-परलोक की आशंसा करना। दोनों लोकों की आशंसा करना। चौथी आशंसा है—जीवन की आशंसा। दीर्घ जीवन की आशंसा करना। लंबा आयुष्य हो, जीने की लालसा। पाँचवाँ है—मरने की आशंसा करना। जल्दी मर जाऊँ। संधारा ले लिया अब जल्दी मर जाऊँ। छठा है—काम की आशंसा। शब्द और रूप काम कहलाते हैं। शब्द और रूप की आशंसा करना। मेरी स्तुतियाँ हों।

सातवाँ प्रकार है—भोग की आशंसा। गंध, रस और स्पर्श की आशंसा। आठवाँ

आशंसा है—लाभांशसा। लाभ चाहिए, वो चीज मिले। मुझे कीर्ति मिले। नवमाँ-पुजाशंसा लोग मेरी पूजा करें। दसवीं—सत्कार आशंसा। मेरा सत्कार हो। सम्मान हो आदि। ये आशंसा के दस प्रकार हैं। आशंसा है, वो आध्यात्मिक साधना में प्रतिकूल तत्त्व है।

आशंसा रहित साधना हो वो बहुत अच्छी बात हो जाती है। निराशंसा साधना हो। मरने और लंबा जीने की भी इच्छा मत करो। सहज में सत्कार, श्लाघा, पूजा हो गई तो हो गई पर लालसा मत करो। तपस्या कर्म निर्जरा के लिए करनी है। न ईहलोक के लिए, न परलोक के लिए। न कीर्ति-सम्मान के लिए तपस्या हो। वैसे ही आचार का पालन करना।

आप लोग गृहस्थ हैं, गार्हस्थ्य का जीवन है। गार्हस्थ्य में जो श्रावकत्व-त्याग है, संयम है, उसके साथ आशंसा नहीं। संधारा भी आत्मा के कल्याण के लिए है, वो ले लिया तो आशंसा यह न हो कि मुझे उच्च देव लोक मिले। संधारे में तो मोक्ष की कामना करनी चाहिए। आचार्य भिक्षु ने कहा है—स्वर्ग! मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए।

आशंसा को जिसने छोड़ दिया, संतोष को धार लिया, सुख-शांति का एक आयाम प्राप्त हो गया। आशंसा-कामना दुःख का कारण बनती है। निष्काम कार्य हो। जहाँ आशंसा-कामना जुड़ती है, वो अध्यात्म की दृष्टि से परित्याज्य चीज होती है। यह एक

प्रसंग से समझाया कि व्यक्ति छोटी कामना से बड़ी उपलब्धि को खो देता है।

दीर्घ को देखो, छोटी को मत देखो। पर को देखो अपर को मत देखो। साधु छोटी चीजों में न उलझे। हम तो परम को देखें। तुच्छ चीजों में न उलझें। ठाणं में बताए इन दस प्रयोगों का जानकर हम यह प्रेरणा ले सकते हैं कि इन दस प्रकार की इच्छाओं में साधु को नहीं उलझना चाहिए। गृहस्थों को भी जितना हो सके इच्छाओं का अल्पीकरण करें। निराशंस-अनिच्छ बनने का प्रयास करें। आचार्य तुलसी ने तो अपने जीवन में आचार्य पद को भी छोड़ दिया था। त्याग है, वो बड़ी बात है। भौतिक आशंसा का त्याग करने की दिशा में हम आगे बढ़ें, यह काम्य है।

मुनि प्रसन्न कुमार जी ने भीलवाड़ा में पुरुषों में हुई तपस्या का विवरण बताया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि नवरात्री के दिनों में अनेक लोग साधना करते हैं। सम्यक्-तप की साधना भी चलती है। तप के बाह्य दो प्रकार अनशन और ऊनोदरी के बारे में आगे समझाया। अनशन दो प्रकार का होता है—निराहारी और अनिराहारी अनशन। ऊनोदरी यानी अल्पता करना।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि हम शक्ति-पुंज से हम शक्ति संपन्न होंगे तो सफलता का वरण होगा।

माता-पिता और गुरु के उपकार रूपी ऋण से उऋण होने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १० अक्टूबर, २०२१

समयज्ञ, उपायज्ञ आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में दस प्रकार के पुत्र बताए हैं। बेटा-पुत्र दस प्रकार के होते हैं। प्रश्न होता है कि पुत्र कौन होता है? जो अपने पितरों, कुल को पवित्र करते हैं अथवा अपने वंश की मर्यादाओं की रक्षा करते हैं, वो पुत्र होते हैं। पुत्र यानी संतति।

पुत्र के दस प्रकारों में पहला है—आत्मज। अपने पिता से पैदा होने वाला पुत्र आत्मज कहलाता है। दूसरा प्रकार है—क्षेत्रज। नियोग निधि से उत्पन्न होने वाला क्षेत्रज पुत्र होता है। तीसरा प्रकार है—दत्तक। गोद लिया हुआ बेटा। चौथा है—विद्यक। जो एक विद्या-शिष्य होता है, वह भी एक प्रकार का पुत्र होता है। पाँचवाँ है—औरस। अपना बेटा नहीं है, पर उसके प्रति हृदय में स्नेह का भाव आता है, उसे पुत्र जैसा मान लेता है।

छठा प्रकार है—मौखर। वाक्पटुता के कारण पुत्र रूप में स्वीकृत। सातवाँ है—संवीर। कोई लड़का बड़ा बहादुर है, उसको बेटे के रूप में मान लेना। आठवाँ प्रकार है—संवर्धित। कोई अनाथ बच्चे को लेकर उसका पालन-पोषण करना। नौवाँ प्रकार है—औपयाचितक। कोई देवता की आराधना से पुत्र मिला है या सेवक है, सेवा करने वाला है। दसवाँ प्रकार है—धर्माति वासी। जो धर्म शिष्य होता है, वह धर्मातिवासी पुत्र हो जाता है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

पुत्र कुल मर्यादा की रक्षा करने वाला होता है, तो आगे से आगे वंश परंपरा चलेगा। कोई-कोई पुत्र बहुत योग्य निकलते हैं। कई पुत्र पिता से भी ज्यादा क्षमतावान, योग्यतावान निकल जाते हैं। जैसे अगस्त्य ऋषि हैं, जो घड़े में उत्पन्न हुए माना जाता है। घड़े में तो सीमित पानी समाता है, पर अगस्त्य ऋषि तो समुद्र का पानी पी गए थे। इतनी क्षमता थी। वह पुत्र धन्य है, जो पिता से आगे निकल जाए। पिता के लिए भी गौरव की बात होती है।

पिता का पुत्र के प्रति फर्ज होता है, तो पुत्र का भी पिता के प्रति फर्ज होता है। पुत्र को माता-पिता आगे बढ़ाने वाले होते हैं, तो पुत्र का भी कर्तव्य होता है कि बुढ़ापे में माँ-बाप की सेवा का ध्यान रखे। जैसे नारियल पहले पानी लेता है, बाद में देता है। संसार में माता-पिता का उपकार और बाद में धर्म-गुरु का उपकार, बाद में उपकारी का जीवन में बड़ा उपकार होता है। उपकारी के उपकार से जितना हो सके उऋण होने का प्रयास करना चाहिए।

भगवान महावीर ने माता-पिता का कितना ध्यान दिया। उनकी उपस्थिति में संयम ग्रहण ही नहीं किया। बड़े-बड़े पुरुषों का माँ के प्रति विशेष सम्मान होता है। चाहे आदमी कितना ही बड़ा बन जाए, पर वह माँ के लिए तो बेटा होता है। इसी तरह गुरु के उपकार से कैसे कितना उऋण हो सकता है। आर्थिक दृष्टि से जो उपकारी होते हैं, उनका उपकार भी नहीं भूलना चाहिए और भी उपकारी हो सकते हैं। उपकारी के प्रति सम्मान का भाव रहे। जैसा अवसर हो उनके प्रति प्रत्युपकार का भाव रहे।

इस तरह ठाणं में दस प्रकार के पुत्र बताए गए हैं। अनेक रूपों में पुत्र हो सकते हैं। पुत्र भी धर्म की दृष्टि से आगे बढ़ें। माता-पिता भी धर्म की दृष्टि में आगे बढ़ें। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि संसार में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपने बारे में, परिवार, समाज और राष्ट्र के बारे में सोचता है। चार प्रकार के मनुष्य बताए गए हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है, लक्ष्य का निर्धारण करना। लक्ष्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक या भौतिक। सबका अपना-अपना महत्त्व होता है। कुछ व्यक्ति लक्ष्यहीन होते हैं, वे भौतिकता में विश्वास रखते हैं। लक्ष्य निर्धारण के चार बिंदु बताए गए हैं। लक्ष्य पोजीटिव, परपजफुल, प्रेक्टिकल और फ्लेक्सिबल हो। पूज्यप्रवर ने सुंदर यात्रा का संकल्प लिया और सफलतापूर्वक यात्रा कर अपने लक्ष्य को साधकर पधारे हैं। संकल्प एक रेश्मी धागा होता है, यह एक कथानक से समझाया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि साधु को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए उसे और अधिक सुदृढ़ बनाना चाहिए। मुनि को बहुत बार आहार का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साधना के द्वारा शक्ति का ऊर्ध्वगमन होता है और भोगों से शक्ति का अधोगमन होता है। ऊणोदरी और भिक्षाचरी के महत्त्व को समझाया।

मुनि दिनेश कुमार जी ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए बताया कि विनम्रता बहुत बड़ी शक्ति होती है। विनम्रता से गुरु को प्रसन्न कर सकते हैं।

धर्म को आत्मशुद्धि का साधन...

(पृष्ठ ११ का शेष)

आचार्य महाप्रज्ञ जी एवं राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के वार्तालाप को बताते हुए कहा कि एक तरफ राष्ट्र है, एक तरफ दल-पार्टियाँ हैं। आचार्य तुलसी कहा करते थे कि धर्म और संप्रदाय में धर्म मुख्य है, संप्रदाय गौण है। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा कि मैं इस बात को यों कहता हूँ कि राष्ट्र मुख्य है, दल उसके सामने गौण है। यह बात कहने से अब्दुल कलाम थोड़े झूम उठे और कहा कि आचार्यजी आपके पास जो भी राजनेता आएँ, उनको ये बात बताया करो। बड़े हित के सामने छोटी बात को गौण कर दो।

शास्त्रकार ने इन दस धर्मों में आत्मा की बात भी बता दी और दूसरी बात भी बता दी। सारे धर्म बता दिए हैं, इससे अनेक संदर्भों में धर्म के प्रयुक्त होने की बात हम पकड़ सकते हैं, ग्रहण कर सकते हैं। आत्मा का कल्याण करना है, तो संवर-निर्जरा साधन है। श्रुत धर्म और चारित्र-धर्म की आराधना करो तो मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

आत्मा से जुड़े लोग आत्मा के धर्म की साधना करें। व्यक्ति समाज में, संसार में अन्य धर्मों की अपनी-अपनी उपयोगिता हो सकती है।

पूज्यप्रवर ने प्रवचन से पहले अनुष्ठान करवाया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने ऊनोदरी तप की विवेचना करते हुए कहा कि तपस्वी को तप करता देखकर कई लोगों को प्रेरणा मिल जाती है। तपस्या करने से सहन करने की क्षमता आ जाती है, आत्मा का बल बढ़ता रहता है। आत्मिक बल से मनोबल बढ़ता है। जो व्यक्ति जीवन में सीमित द्रव्यों का उपयोग करते हैं, उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि इंद्रिय और मन के संयम से द्रव्य आत्मा की रक्षा करें।

कठिनाइयों का सामना करने पर मिलती है...

(पृष्ठ १२ का शेष)

साध्वीवर्या जी ने पाँचवीं मंगलभावना-शक्ति संपन्नोऽम स्याम का विवेचन करते हुए कहा कि मैं शक्ति संपन्न बनूँ, इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति इस भावना से अपने आपको भावित करें। शक्ति के बिना कुछ नहीं होता। हमारे भीतर अनंत शक्ति है, उसका जागरण करना होगा। शक्ति जागरण के पाँच प्रकार—दीर्घ श्वास प्रेक्षा, क्रोध नियंत्रण। वाणी-संयम, आहार-संयम और कायोत्सर्ग को विस्तार से समझाया।

टीपीएफ द्वारा आयोजित ५वीं नेशनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। टीपीएफ गौरव छत्तीसगढ़ के जज गौतमचंद चोरड़िया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। गौतमचंद चोरड़िया ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि दो शब्द हैं—अनुस्रोत और प्रतिस्रोत। अनुस्रोत में चलना आसान होता है। प्रतिस्रोत में चलना कठिन होता है। प्रवाह के विरुद्ध गति करना मुश्किल है। सुविधाओं के साथ चलना आसान है। सुविधाओं को छोड़कर चलना कुछ कठिन हो सकता है। आपकी कॉर्पोरेट कॉन्फ्रेंस का विषय है Chal-lenge Yourself. आदमी सुविधा में ही रहता है, तो आगे कुछ विशेष पाना मुश्किल होता है। कठिनाइयों में जी सके वो अभ्यास हो जाए, जीवन में विशेष उपलब्धि हो सकती है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संयम और सेवा जीवन में आए तो जीवन सार्थक : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३ अक्टूबर, २०२१

तीर्थकर के प्रतिनिधि, तेरापंथ के भाग्य-विधाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में संज्ञा के दस प्रकार बताए गए हैं।

संज्ञा के दो अर्थ हो सकते हैं। पहला अर्थ अबोध और दूसरा मनोविज्ञान। अबोध एक ज्ञान है, वो संज्ञा का संवेदात्मक रूप में ज्ञान हो, स्मृति हो। वृत्ति भी कहा जा सकता है। वृत्ति ज्ञानात्मक भी हो सकती है, भावात्मक भी हो सकती है। भीतर की हमारी वृत्तियाँ हैं, वे संज्ञाएँ हैं। दस प्रकारों में आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा, परिग्रह संज्ञा, क्रोध संज्ञा, मान संज्ञा, माया संज्ञा, लोभ संज्ञा, लोक संज्ञा और ओघ संज्ञा है।

ये प्रथम आठ और दो दस प्रकार हैं। आठ प्रकार हैं, वे संवेगात्मक, Emotion प्रधान है। शेष दो ओघ संज्ञा और लोक संज्ञा ये इमोशन से इतने जुड़े हुए नहीं हैं। ज्ञान से ही मुख्यतया जुड़े हुए हैं। ये दोनों ज्ञानात्मक हैं। ओघ संज्ञा की एक सामान्य अवबोध, दर्शनोपयोग, सामान्य प्रवृत्ति के रूप में उल्लिखित किया गया है। ये ज्ञान इंद्रिय के निमित्त से भी होता है, अनेन्द्रिय मन के निमित्त से भी हो जाता है।

पाँच इंद्रियों से भी हमें ज्ञान होता है। ओघ ज्ञान है, वो थोड़ा सा इंद्रियों से हटकर, कोई चेतना का ऐसा ज्ञान होता है। पाँच इंद्रियाँ बताई गई हैं। वैज्ञानिक जगत में एक छठी इंद्रिय मानी गई है, वो छठी इंद्रिय ओघ संज्ञा की हो सकती है। यह अतीन्द्रिय अंतःकरण की स्थिति है।

कई वैज्ञानिकों ने माना है कि प्रकृति से ये छठी इंद्रिय हमारे पूर्वजों को और पशु-पक्षियों को प्राप्त थी। पशु-पक्षियों में भी यह ओघ संज्ञा वाला ज्ञान मालूम होता है। उसके कुछ उदाहरण भी हैं। जैसे भूकंप आने वाला है, तूफान आने वाला है, तो



पशु-पक्षियों को पहले ही आभास हो जाता है। वे अपने सुरक्षित स्थान में पहले ही पहुँच जाते हैं।

कुछ आदिम जातियों के मनुष्यों में भी ये स्थितियाँ उल्लिखित हुई हैं कि वो कैसे विचारों का आदान-प्रदान मानसिक रूप से हो जाता है। इसी प्रकार लोक संज्ञा को भी विशेष अवबोध वाली बताया गया है। ये दो संज्ञाएँ इमोशन से इतनी जुड़ी हुई नहीं, ज्ञानात्मक चेतना से जुड़ी हुई हैं। इनका संबंध ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से जुड़ा हो सकता है। बाकी जो आठ संज्ञाएँ हैं, उनमें भावात्मकता की प्रधानता है।

आदमी को आहार संज्ञा होती है, वो सुधा वेदनीय या मोहनीय कर्म से हो सकती है। भय भी मोहनीय कर्म से होता है। कई छोटे जीवों से भय जुड़ जाता है। ऐसे ही मैथुन संज्ञा होती है। परिग्रह संज्ञा-परिग्रह कर लो, पदार्थों या व्यक्तियों के प्रति आसक्ति-लालसा, तृष्णा से संग्रह वृत्ति हो

जाती है। क्रोध संज्ञा गुस्से से हो जाती है। अहंकार की संज्ञा-बात-बात में अपने को बड़ा बताना।

माया की संज्ञा-आदमी छल-कपट कर लेता है। लोभ की भी संज्ञा परिग्रह से जुड़ी है। हमारा सामान्य जीवन जो छठे गुणस्थान तक का जीवन है, इसमें ये संज्ञाएँ योगात्मक रूप में शुभ योग के रूप में भी आ सकती है। सम्यक्त्वी के भी प्रमाद हो सकता है और मिथ्यात्वी के भी हो सकती है।

इसके लिए प्रेक्षाध्यान में अभय की अनुप्रेक्षा का प्रयोग है, जप का प्रयोग-गणो जिणाणं जिय भयाणं का आलंबन ले सकते हैं। अपने इष्ट का स्मरण करें। भिक्षु स्वामी का जप भी किया जा सकता है। अभय को बढ़ाने का प्रयास करें। लक्ष्यपूर्वक प्रयास किया जाए तो इन संज्ञाओं को कृश बनाने में आगे बढ़ा जा सकता है। ये हमारे चेतना के ऊर्ध्वारोहण का कार्य हो सकता है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि मनुष्य का जीवन एक प्रवाह है। जीवन अपनी गति से चलता है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो जीवन के बारे में सोचता है। जीवन को अच्छा बनाने का प्रयास करता है। जीवन व्यस्त नहीं मस्त होना चाहिए। भारतीय संस्कृति में जीवन उसे माना गया है, जो शांति, सुख व आनंद का अनुभव कराने वाला होता है।

असमंजस्य में जीवन न जीएँ। जीवन में आवश्यकता होती है, पर आकांक्षा न हो। आनंदमय जीवन हो। जीवन में संयम की चेतना जागृत हो, संयम में विश्वास हो। जीवन में संयम की प्रधानता रहे। सच्चा सुख, शांति और आनंद संतोष में है। साधन शुद्धि से पवित्रता आएगी।

मुख्य नियोजिका जी ने चारित्र्य विवेचना करते हुए कहा कि सर्व सावद्य योगों का त्याग करना चारित्र्य है। पाँच

महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति इनका अनुष्ठान है। सिर्फ ज्ञान की आराधना लक्ष्य तक नहीं ले जा सकती है। वीतरागता के लिए चारित्र्य जरूरी है।

साध्वीवर्या जी ने धी संपन्नोहं स्याम की विवेचना करते हुए कहा कि मनुष्य एक बुद्धिशाली प्राणी है, फिर भी उसमें विकार आता है। पर पशु-पक्षी में विकार नहीं आते। मनुष्य अपनी बुद्धि का गलत उपयोग कर सकता है, तो अच्छा उपयोग भी कर सकता है।

भंवरलाल कर्णावट परिवार द्वारा संचालित भंवरलाल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दिया जाने वाला बोधि सम्मान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वाचन फरमाया कि आदमी के जीवन को सुफल-सार्थक बनाने के लिए दो उपाय महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो रहे हैं। मुख्य उपाय है, आदमी अपने जीवन में संयम की चेतना को पुष्ट करने का प्रयास करे। त्याग की तरफ आगे बढ़े। गृहस्थ जीवन में ये संभव नहीं है, पर जितना त्याग-संयम बढ़ा सके आदमी वो अच्छा है। उम्र के साथ संयम बढ़े।

दूसरी बात है, आदमी दूसरों की सेवा क्या करता है। दूसरों की सेवा करना मनुष्य जीवन की सार्थकता है। संयम और सेवा जीवन में आ गए हैं, तो जीवन सार्थक हो सकेगा। सम्मान का विवेचन अनेक दृष्टियों से किया जा सकता है। सेवा करने वाले को सम्मान की अपेक्षा न रहे। कर्णावट परिवार द्वारा सम्मान दिया जा रहा है, ये अच्छे कार्य की प्रेरणा पुष्ट होती रहे।

देव कोठारी, महेंद्र भाणावत, प्रो० धर्मचंद जैन, चतुर कोठारी को बोधि सम्मान प्रदान किया गया। सभी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धर्म को आत्मशुद्धि का साधन बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ८ अक्टूबर, २०२१

तीर्थकर के प्रतिनिधि, शक्ति के स्रोत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशणा देते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के दसवें अध्याय में धर्म के दस प्रकार बताए गए हैं। धर्म शब्द अनेक संदर्भों में प्रयुक्त किया जा सकता है। धर्म का एक अर्थ है-आत्मा की शुद्धि का साधन धर्म होता है। जिससे आत्मा का कल्याण हो सके, मोक्ष प्राप्ति हो सके, दुर्गति से बचाव हो सके।

इस संदर्भ में संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया है कि इस संसार में लोग दुर्गति में गतिमान हो जाते हैं, उनको रोक लेना, बचा लेना और उनको अच्छे स्थान में स्थापित कर देना, जो ये काम करता है, वो धर्म होता है। आत्मशुद्धि के साधन के रूप में धर्म का प्रयोग होता है, दूसरे रूप में धर्म कर्तव्य स्वरूप भी होता है।

जहाँ आत्म-शुद्धि की बात है, वहाँ तो निरवद्यता होनी चाहिए। जहाँ कर्तव्य-व्यवस्था की बात है, वहाँ

सावद्य-निरवद्य का प्रसंग नहीं। कर्तव्य क्या, व्यवस्था क्या, वही धर्म हो जाता है। तीसरा अर्थ है, धर्म का-सृष्टि का एक घटक तत्त्व है-जीव और पुद्गल की गति में जो सहज रूप से उदासीन भाव से सहायक द्रव्य है, वह धर्म है। यों धर्म के तीन संदर्भ मेरे ध्यान में आ रहे हैं। प्रस्तुत सूत्र से भी इन तीनों संदर्भों को निचोड़ के रूप में निकाला जा सकता है।

इन दसों प्रकारों को तीन वर्गीकरण में विभाजित किया जा सकता है। पहला प्रकार है-ग्राम धर्म। गाँव की व्यवस्था, आचार, परंपरा आदि। दूसरा है-नगर-धर्म। जैसे ग्राम की व्यवस्था, वैसे नगर की व्यवस्था। तीसरा है-राष्ट्रधर्म। राष्ट्र की व्यवस्था न्यायपालिका, कार्यपालिका आदि की व्यवस्था। राष्ट्र की रक्षा की बात आती है।

चौथा है-पासंड-धर्म। श्रमण संप्रदायों का आचार। जैन धर्म, बौद्ध धर्म, आजीवक परिव्राजक ये

कई आम्नाय है, जो श्रमण संप्रदाय के अंतर्गत आता है। पाखंडों का अपना आचार होता है। पाँचवाँ कुल-धर्म, कुल की व्यवस्था। छठा है-गण-धर्म। गणराज्यों की व्यवस्था। सातवाँ-संघ-धर्म। चतुर्विध धर्मसंघ की व्यवस्था। आठवाँ है-श्रुत-धर्म। ज्ञान की आराधना। नौवाँ है-चारित्र्य-धर्म। संयम की साधना।

दसवाँ बताया है-अस्तिकार्य-धर्म। धर्मास्तिकाय यह गति सहायक द्रव्य है। मैंने जो भी संदर्भ बताए हैं, उनमें पहला है, आत्म शुद्धि का धर्म उसमें श्रुत धर्म और चारित्र्य धर्म आ जाते हैं। फिर कुछ जुड़े हुए अंशों में पासंड धर्म और संघ-धर्म हो सकते हैं। दूसरा संदर्भ है-व्यवस्था-कर्तव्य। इसमें ये ग्राम-धर्म, नगर धर्म, राष्ट्र धर्म, पासंड धर्म, कुल धर्म, गण धर्म, संघ धर्म ये सातों आ जाते हैं।

जहाँ व्यवस्था की बात है, वहाँ ग्राम का मुखिया या सरकार की क्या बात है। यहाँ सावद्य-निरवद्य नहीं

सुरक्षा कैसे रहे यह मुख्य है। ग्राम धर्म, नगर धर्म और राष्ट्र धर्म है, उनके अधिकारी लोग हैं, उनका धर्म है कि सज्जनों की रक्षा करें। जो दुर्जन लोग हैं, उन पर अनुशासन होना चाहिए। जो आश्रित लोग हैं, उनका भरण हो। यह व्यवस्थापक धर्म है।

ठाणं आगम में हम देखें कि कितनी व्यापक दृष्टि अपनाई गई है। जहाँ आत्म धर्म की बात बताई है, तो ग्राम, नगर, राष्ट्र धर्म की बात शास्त्रकार ने बता दी।

जहाँ आत्मा की बात है, वो थोड़ा प्रासंगिक बन जाता है। जहाँ कुल के हित का प्रश्न है, वहाँ एक आदमी को गौण कर देना चाहिए। जहाँ ग्राम, नगर या राष्ट्र के हित की बात है, वहाँ परिवार, ग्राम या नगर के हित की बात को गौण कर दो। जहाँ आत्मा के हित की बात आ गई वहाँ सब कुछ छोड़कर आत्म-साधना में लग जाओ। आत्मा के लिए सब कुछ छोड़ दो।

(शेष पृष्ठ १० पर)



५वें टीपीएफ के अधिवेशन का आयोजन

कठिनाइयों का सामना करने पर मिलती है विशेष उपलब्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ६ अक्टूबर, २०२१

शक्ति पुंज, शक्तिधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में दस प्रकार के स्थविर बताए गए हैं। स्थविर कौन होता है। जो ज्येष्ठ होता है, वह स्थविर होता है। प्रश्न है—बड़ा किस दृष्टि से हो? शास्त्रकार ने जो दस प्रकार बताए हैं, उनसे यह निचोड़ निकाला जा सकता है, किन संदर्भों में आदमी बड़ा होता है।

पहला प्रकार है—ग्राम स्थविर—गाँव का स्थविर जैसे ग्राम पंचायत का सरपंच। जो मान्य है, शक्तिशाली है, गाँव का अधिकारी है। दूसरा है—नगर स्थविर। नगर का मुखिया नगरपालिका का अध्यक्ष। तीसरा प्रकार है—राष्ट्र-स्थविर। राष्ट्र का अधिकृत आदमी। जैसे लोकतंत्र में राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री। चौथा प्रकार है—प्रशास्ता स्थविर। धर्मोपदेशक, अध्यात्म की, धर्म की बातें बताने वाला। अधिकृत प्रवचनकार।

पाँचवाँ प्रकार है—कुल स्थविर, छठा प्रकार है—गण स्थविर, सातवाँ प्रकार है—संघ-स्थविर। कुल, गण या संघ का मुखिया। कुल, गण और संघ लौकिक भी होते हैं और लोकोत्तर भी होते हैं। लौकिक संदर्भ में ये शासन-प्रशासन की ईकाईयाँ रही हैं। पहले कुलकर व्यवस्था थी, बाद में गणराज्य की व्यवस्था हुई बाद में संघराज्य की व्यवस्था हुई। इनकी व्यवस्था करने वाला मुखिया या स्थविर होता है। राजा भी अपने राज्य का स्थविर होता है। ये शासन की प्रणालियाँ लौकिक क्षेत्र में रही हैं।

हम लौकोत्तर-धर्म के क्षेत्र में देखें।



यहाँ भी गण-संघ होता है, कुल की बात भी रही है। साधु संस्था में एक आचार्य का शिष्य समुदाय है, वह कुल कहलाता है। तीन आचार्यों का शिष्य समुदाय है, वह गण कहलाता है। अनेक आचार्यों के शिष्यों का समुदाय है, वो संघ कहलाता है। इनमें जो मुख्य व्यक्ति होता है, वह कुल स्थविर, गण स्थविर, संघ स्थविर होता है। हमारे जैन शासन में स्थविर की भी व्यवस्था आती है, कि शिष्य हैं, किसी में अच्छी श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई तो धर्म में श्रद्धा उत्पन्न करना। या किसी की श्रद्धा कमजोर पड़ गई, विचलित हो गया, उसको वापस मजबूत कर देना, संघ व धर्म में स्थिर कर देता है, वह साधु-संस्था में स्थविर होता

है। आठवाँ प्रकार है—जाति स्थविर। जो उम्र से बड़ा हो जाए, ६० वर्ष की उम्र से बड़ा हो गया, अब वह जाति स्थविर हो गया। नवमाँ प्रकार है—श्रुत स्थविर। जो ज्ञान की दृष्टि से बड़ा होता है। जो आगमों का ज्ञाता है। दसवाँ प्रकार है—स्थविर का पर्याय स्थविर। जो संयम पर्याय से बड़ा हो गया। कम से कम २० वर्ष का संयम पर्याय हो गया तो बड़ा स्थविर हो गया। यों दस प्रकार हो गए।

जो उम्र में बड़ा हो गया उसके प्रति सम्मान व अनुकंपा का भाव रखो। जो ज्ञान में बड़ा है, श्रुत स्थविर है, उसका भी पूजा-सम्मान होना चाहिए। जो पर्याय में

बड़ा है, उसकी वंदना करें, वो वंदनीय है। जो जाति स्थविर है, उसकी उसके स्वास्थ्य प्रकृति व काल के अनुसार अनुकूल आहार लाकर देना चाहिए। उनकी व्यवस्था अच्छी हो जाए।

एक ज्येष्ठ जो उम्र के संदर्भ में बड़ा आदमी, दूसरा है, ज्ञान के संदर्भ में बड़ा व्यक्ति, तीसरा संयम के पर्याय में बड़ा व्यक्ति, चौथा पद-अधिकार की दृष्टि से बड़ा व्यक्ति। बड़े होने के चार संदर्भ हो जाते हैं। गुरुदेव तुलसी २२ वर्ष की उम्र में आचार्य बन गए थे पर संयम पर्याय में बड़े साधुओं को वे वंदना करते थे।

जो सात स्थविर ग्राम, नगर, राष्ट्र प्रशासन (प्रशासक) कुल, गण व संघ ये

पद अधिकार आदि के रूप में बड़े होते हैं। आठवाँ उम्र के हिसाब से बड़ा, नौवाँ श्रुत के हिसाब से बड़ा और दसवाँ पर्याय के हिसाब से बड़ा। पूज्य पूजा का भी प्रोटोकॉल होता है कि किसका कितना सम्मान होना चाहिए। कोई संयम पर्याय में बड़ा है, कम पढ़ा लिखा है, तो भी ज्यादा पढ़ा लिखा उन्हें वंदन करें।

इन चारों में वंदन की दृष्टि से देखें तो साधु-संस्था में सबसे बड़ा स्थविर है, वो पर्याय स्थविर हैं। ज्ञानी या अधिकारी संत हैं, वो भी पर्याय स्थविर को वंदन करे। उम्र में बड़ा है, पर्याय में छोटा है, तो पर्याय में बड़े को वंदन करे। साधु-संस्था में पर्याय स्थविर का सबसे बड़ा महत्त्व है।

वर्तमान में हमारे मुनि हर्षलाल जी स्वामी हैं, वो पुरुष चारित्रात्माओं में सबसे बड़े हैं। आपके लिए कोई साधु वैधानिक रूप में वंदनीय नहीं है, आप सबके वंदनीय हैं। संयम पर्याय के सामने उम्र-ज्ञान व पद भी गौण है। शास्त्रकार ने एक सुंदर जानकारी यहाँ दी है।

पूज्यप्रवर ने प्रवचन से पूर्व नवाहिनक अनुष्ठान के अंतर्गत अनुष्ठान करवाया। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का एक ग्रंथ है—शील की नव बाड़। जो व्यक्ति शील व्रत ग्रहण करना चाहता है, वो इन नव बाड़ों का अध्ययन करें। शील व्रत को पुष्ट बनाने के लिए सरस आहार का वर्जन करना होगा। ऊणोदरी तप दुष्कर तप है। मनोज्ञ पदार्थों को छोड़ना आसान नहीं होता है। चौदह नियम खाओ, पीयो और मोक्ष पाओ जैसे हैं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अभातेयुप अधिवेशन की चित्रमय झलकियाँ

